



THEOLOGIA.

N. 275



DIES
PARTHENIUS.

S I V E.

QUOTIDIANA PIETATIS
EXERCITIA.

Per totius Anni decursum

A

MARIANIS

CULTORIBUS

Saluberrimè obeundâ

Denuò in Lucem editus.

L U B L I N I

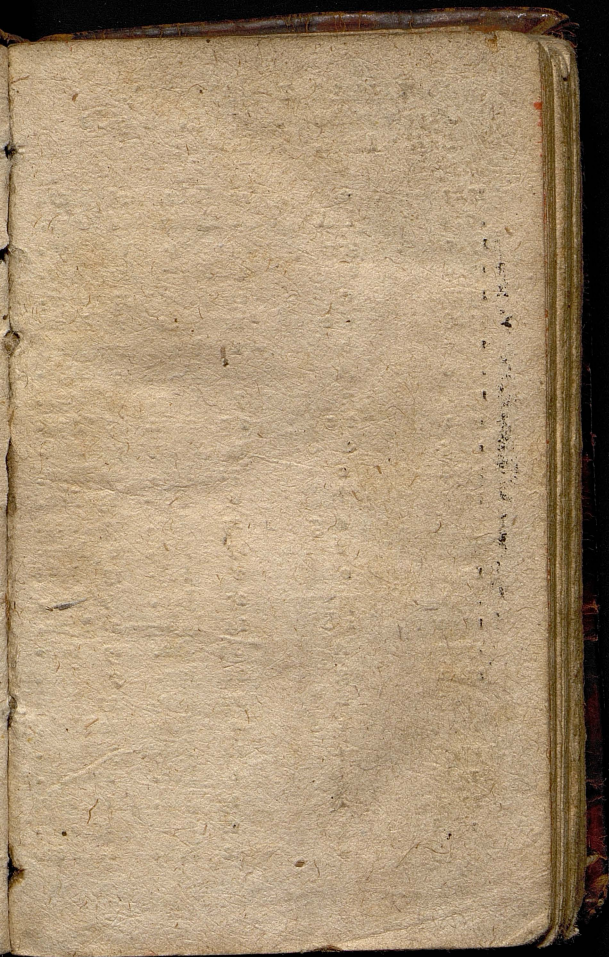
Typis Collegij Societatis.

J. E. S. U. Anno D. 1723.

Boon's Publication Co. New York
and T. J. B. Co. New York

35. 247

下



TABULA TEMPORARIA.

Anni Litera Dies Ci. Pascha
Uni. Lomi. narum.

| | | | |
|------|------|----------|---------|
| 1723 | c | 10 Febr. | 28 Mar. |
| 1724 | b A | 1. Mart. | 16 Apr. |
| 1725 | g | 14 Febr. | 1 Apr. |
| 1726 | f | 6 Mart. | 21 Apt. |
| 1727 | e | 26 Febr. | 13 Apr. |
| 1728 | d e | 11 Febr. | 28 Mar. |
| 1729 | b | 2 Mart. | 17 Apr. |
| 1730 | A | 22 Febr. | 9 Apr. |
| 1731 | g | 7 Febr. | 25 Mar. |
| 1732 | f e | 27 Febr. | 13 Apr. |
| 1733 | d | 18 Febr. | 5 Apr. |
| 1734 | c | 21 Febr. | 10 Mar. |
| 1735 | b | 6 Feb. | 23 Feb. |
| 1736 | A g | 29 Jan. | 15 Fec. |
| 1737 | f | 17 Feb. | 6 Mar. |
| 1738 | e | 2 Feb. | 18 Feb. |
| 1739 | d | 25 Jan. | 11 Feb. |
| 1740 | c b | 14 Feb. | 2 Mar. |
| 1741 | A | 29 Jan. | 15 Feb. |
| 1742 | g | 21 Jan. | 7 Feb. |
| 1743 | f | 10 Feb. | 27 Feb. |
| 1744 | e, d | 2 Feb. | 10 Feb. |
| 1745 | c | 14 Feb. | 3 Mar. |
| 1746 | b | 6 Feb. | 23 Feb. |
| 1747 | A | 29 Jan. | 15 Feb. |
| 1748 | g f | 11 Feb. | 28 Feb. |
| 1749 | e | 2 Feb. | 10 Feb. |

FISTORUM MOBILIIUM:

| Ascensio, | Penteco. flos | Corpus Christi | Dominus 1: A46. |
|-----------|------------------|-------------------|--------------------|
| 9 Maj. | 16 Maj. | 27 Maj. | 28 9br. |
| 25 Maj. | 4 Iun. | 15 Iun. | 3 1obr. |
| 30 Maj. | 20 Maj. | 31 Maj. | 2 1obr. |
| 10 Maj. | 9 Iun. | 20 Iun. | 1 1obr. |
| 30 Maj. | 1 Iun. | 12 Iun. | 30 9br. |
| 22 Maj. | 16 Maj. | 27 Maj. | 28 9br. |
| 66 Maj. | 5 Iun. | 16 Iun. | 27 8br. |
| 28 Maj. | 28 Maj. | 8 Inn. | 3 1obr. |
| 1 Maj. | 13 Maj. | 24 Maj. | 2 1obr. |
| 32 Maj. | 8 Iun. | 12 Iun. | 30 9br. |
| 24 Maj. | 14 Maj. | 4 Iun. | 29 9br. |
| 18 Apr. | 25 Apr. | 3 Jun. | 13 Jun. |
| 7 Apr. | 10 Apr. | 19 Maj. | 29 Maj. |
| 27 Mai. | 1 Apr. | 10 Maj. | 20 Maj. |
| 15. Apr. | 21 Apr. | 30 Maj. | 9 Jun. |
| 4 Apr. | 6 Apr. | 15 Maj. | 25 Maj. |
| 24 Mar. | 29 Mar. | 7 Maj. | 17 Maj. |
| 15 Apr. | 17 Apr. | 26 Maj. | 5 Jun. |
| 1 Apr. | 2 Apr. | 11 Maj. | 12 Maj. |
| 21 Mar. | 25 Mar. | 3. Maj. | 13 Maj. |
| 9 Apr. | 14 Apr. | 23 Maj. | 2 Jun. |
| 29 Mar. | 5 Apr. | 14 Maj. | 14 Maj. |
| 17 Apr. | 18 Apr. | 17 Maj. | 6 Jun. |
| 6 Apr. | 10 Apr. | 19 Maj. | 29 Maj. |
| 26 Mar. | 2 Apr. | 11 Maj. | 21 Maj. |
| 13 Apr. | 14 Apr. | 23 Maj. | 2 Jun. |
| 2 Apr. | 6 Apr. | 15 Maj. | 25 Maj. |
| 22 Mar. | 29 Mar. | 7 Maj. | 17 Maj. |

JANUARIUS habet dies XXXI

Annus Locus.

| | | | | |
|-----------------|---|----------------------|------|--------------|
| 1 | A | Circumcisio Dom. | 1 | Hierosoly. |
| 2 | b | Macarius Abbas | 372 | Theb. in Æg. |
| 3 | c | Genovefa V. & M. | 48 | Parisiis. |
| 4 | d | Titus Episcopus | 92 | Cretæ |
| 5 | e | Eduard Rex Ang | 1106 | In Anglia. |
| (Epiphania Dom. | | | | |
| 6 | f | (Cassar. Melchi Bal. | 1 | In Bethleh. |
| 7 | g | Lucianus Mart. | 311 | Helenopo. |
| 8 | A | Eberhardus Episc. | 453 | Ratisbonæ. |
| 9 | b | Julianus Mart. | 309 | Antiochiæ. |
| 10 | c | Paul. 1. Eremita | 343 | Thepis |
| 11 | d | Hyginus X. Pap. M. | 55 | Romæ |
| 12 | e | Reinoldus Mart. | | Coloniæ |
| 13 | f | Hilarius Episc. | 369 | Pictavis. |
| 14 | g | Felix Presbyter | 310 | Nolæ. |
| 15 | A | Maurus Abbas | 583 | Andegavis. |
| 16 | b | Marcell 19 P. M. | 309 | Romæ. |
| 17 | c | Antonius Abbas | 385 | Alexandriæ |
| 18 | d | Cathedra S. Petri. | 44 | Romæ. |
| 19 | e | Marlus Mart. | 270 | Romæ. |
| 20 | f | Fabianus & Sebastia | 253 | Romæ. |
| nus M. M. | | | | |
| 21 | g | Agnes V. M. | 304 | Romæ. |
| 22 | A | Vincentius M. | 302 | Valentia |
| 23 | b | Joannes Eleemos | 620 | Alexandriæ |
| 24 | c | Timotheus Episc. | 109 | Ephes. |
| 25 | d | Conversio S. Pauli | 53 | Prope Dam |
| 26 | e | Polycarp. Ep. M. | 169 | Smyrnæ. 27 |

| | | | |
|------|--------------------|-----|--------------|
| 27 f | Joa Chrysoſtomus | 407 | Conſtantinep |
| 28 g | Carolus Magnus | 814 | Aquisgranſ |
| 29 A | Valerius Epifcopus | 71 | Treviriſ. |
| 30 b | Aldegundis Virg | 643 | Malboldii, |
| 31 c | Marcellia Vidua | 411 | Romæ |

FEBRUARIUS habet dies XXVIII

| <i>Dies</i> | <i>Lit.</i> | <i>Annus</i> | <i>Locus</i> |
|-------------|-----------------------------|--------------|--------------|
| 1 d | Ignatius Ep. M, | 110 | Antiochiæ |
| 2 c | <i>Purificatio B. V. M.</i> | 1 | Hierofoly. |
| 3 f | Blafius Ep. M, | 300 | Seba in Ar |
| 4 g | Aventinus C. | 480 | Throcis |
| | (Agata Virg M. & | | |
| 5 A | (Paulus, Joannes, | 252 | Catana. |
| | Jacobus S J. M. M. | 1597 | In Japonia |
| 6 b | Dorothea V, M. | 304 | Calareæ |
| 7 c | Richard Rex Angl. | 750 | In Tuſcia. |
| 8 d | Honoratus Epifc. | 570 | Mediolani. |
| 9 e | Apollonia | 252 | Alexandria |
| 10 f | Scholastica Virg. | 535 | Caſſini. |
| 11 g | Dekderius Epifc. | 611 | Lugduni. |
| 12 A | Eulalia Virg. M. | 304 | Barcinone |
| 13 b | Franquillus M. | 185 | Conſluentia |
| 14 c | Valentinus Presb. | 271 | Romæ |
| 15 d | Fau. & Jov, M, M. | 122 | Boixæ. |
| 16 e | Juliana M. | 290 | Nicomedia |
| 17 f | Julianus M. | 300 | Cafareæ |
| 18 g | Simeon Ep. M, | 209 | Hierofoly. |
| 19 A | Manſuetus Ep. | 620 | Mediolani |
| 20 b | Eucherius Ep. | 731 | Aurelia. 21 |

| | | | |
|------|-----------------------|-----|------------|
| 21 c | Felix Ep. | 100 | Metis |
| 22 d | Cathedra S. Petri | 40 | Antiochia |
| 23 e | Florentius Conf. | | Hispali. |
| 24 f | <i>Vigilia</i> | | |
| | <i>Mathias Apost.</i> | 60 | Treviris |
| 25 g | Victorinus M. | 224 | In Aegypto |
| 26 A | Alexander Ep. | 254 | Alexandria |
| 27 b | Leander Episc. | 603 | Hispali |
| 28 c | Romanus Abbas | 565 | Lugduni. |

In anno Bisextili Februarius est 29, dierum.
Et Festum Sancti Matthia celebratur 25.

MARTIUS habet dies XXXI.

| Dies | Lir. | Annus | Locus. |
|------|------|---------------------|-------------------|
| 1 | d | Svibertus Ep. | 717 Verda |
| 2 | e | Simplicius 49. Pap. | 467 Roma |
| 3 | f | Chunegundis Imp. | 1040 Bambergæ |
| 4 | g | Casimirus Rex | 1473 Vilna |
| 5 | A | Adrianus Mart. | 300 Caesarea |
| 6 | b | Evagrius Ep. | 371 Constantinop. |
| 7 | c | Thom. Aquin. C. | 1274 Tolosa |
| 8 | d | Julianus M. | 680 Toleti |
| 9 | e | Francisca Vidua | 1440 Roma |
| 10 | f | Alex. & Cajus M.M. | 173 Apamea |
| 11 | g | Eulogius M. | 869 Eridubz |
| 12 | A | Greg. Mag. 66 Pa. | 604 Roma. |
| 13 | b | Nicephorus Ep. | 827 Constantinop. |
| 14 | c | Methildis Regina | 973 Halberstadii |
| 15 | d | Longinus M. | 34 Caesarea |
| 16 | e | Heribertus Ep. | 131 Colonia 17 f |

| | | | |
|------|--------------------------|------|--------------|
| 17 f | Gertrudis V. | 664 | Nivigellæ |
| 18 g | C. Hilus Episc. | 386 | Hierosoly |
| 19 A | Joseph. Nutritus Christi | 38 | in Nazareth. |
| 20 b | Joach. Parens B. V. | | in Nazareth. |
| 21 c | Benedictus Abbas | 541 | Cassini |
| 22 d | Simeon puer | 1475 | Tridenti |
| 23 e | Victorinus M. | 484 | in Africa |
| 24 f | Gabriel Archang. | | |
| 25 g | Annunciatio B. M. | | in Nazareth. |
| 26 A | Lodgerus Ep. | 809 | Monatterii |
| 27 b | Rupertus Ep. | 730 | Salisburg, |
| 28 c | Felix Episc. | 386 | Treviris |
| 29 d | Armogastus Conf. | 456 | in Affrica |
| 30 e | Quirinus M. | 131 | Romæ |
| 31 f | Balbina Virg. | 131 | Romæ |

APRILIS habet dies XXX.

Annus Locus.

| Dies. | Lir. | | |
|-------|----------------------|------|--------------|
| 1 g | Hugo Episc. | 1132 | Gratianop. |
| 2 A | Franciscus de Paula | 507 | Turonis |
| 3 b | Richardus Episc. | 1255 | in Anglia |
| 4 c | Isidorus Episc. | 636 | Hispali |
| 5 d | Vincencius Ferrerius | 1419 | Veneris |
| 6 e | Sixtus Papa 8 Mart. | 132 | Romæ |
| 7 f | Tilmans M. | 256 | Romæ |
| 8 g | Dionysius Episc. | 178 | apud Corinth |
| 9 A | Procorunus M. | 44 | Antiochiæ |
| 10 b | Macarius Episc. | 190 | Alexandriæ |
| 11 c | Leo Papa 47. | 461 | Romæ |
| 12 d | Julius Papa 36. | 353 | Romæ 13 e |

| | | | |
|------|--------------------|------|------------|
| 13 e | Hermenegildus M. | 584 | Hispaniæ |
| 14 f | Tiburcius M. | 231 | Romæ |
| 15 g | Anastasia M. | | Romæ. |
| 16 A | Toribius Episc. | 460 | Palentini |
| 17 b | Anicet, Pap, M. | 173 | Romæ |
| 18 c | Eleutherius Episc. | 140 | Messaniæ |
| 18 d | Wernerus Mart. | 8287 | VVesaliæ |
| 20 e | Victor Pap. M. | 204 | Romæ |
| 21 f | Anselmus Episc. | 1109 | Cantuariæ |
| 22 g | Soter Pap. 13 M. | 179 | Romæ |
| 23 A | Adalbertus Mart. | 997 | in Prussia |
| 24 b | Georgius Mart. | 295 | in Persia |
| 25 c | Marcus Evangel. | 64 | Venetis |
| 26 d | Cletus Pap 3 M. | 93 | Romæ |
| 27 e | Anastasiu Pap 41 | 404 | Romæ |
| 28 f | Vitalis Mart. | 160 | Ravennæ |
| 29 g | Petrus Mart. | 1252 | Mediolanæ |
| 30 A | Cathar Senen. V. | 1180 | Romæ |

MAJUS habes dies XXXI.

| Dies | Lic. | Annus Locus, | |
|------|--------------------|--------------|----------------|
| | | | |
| 1 b | Philip & Jacobi Ap | 54 | In Scyth hic. |
| 2 c | Athanasius Episc. | 312 | Alexandriæ |
| 3 d | Inventio S. Crucis | 326 | Hierosoly. |
| 4 e | Monica Vid | 392 | Ad Ostia Ty- |
| 5 f | Gothardus Episc. | | Heldefii |
| 6 g | Joan ante port Lat | 91 | Romæ |
| 7 A | Stanislaus Episc. | 1079 | Cracoviz |
| 8 b | Apparit S. Mich. | 494 | In Apulia |
| 9 c | Gregorius Episc. | 389 | Nazianzi. 10 d |

| | | | |
|------|-------------------|------|----------------|
| 10 d | Gordianus M. | 471 | Romæ |
| 11 e | Manertus Episc. | 468 | Vieonæ in Gal. |
| 12 f | Ner & Ach M.M. | 98 | Romæ |
| 13 g | Servatius Episc. | 370 | Trajecti |
| 14 A | Bonifacius M. | 305 | Romæ |
| 15 b | Isidorus M. | 253 | In Chio Insa |
| 16 c | Peregrinus Episc. | 150 | Antistiodori |
| 17 d | Reit. Vir. & M. | 379 | Apud Neap. |
| 18 e | Ericus Rex M. | 1151 | Upsalia |
| 19 f | Ivo Presbyter | 146 | Romæ |
| 20 g | Bernard. Senensis | 144 | Aquile |
| 21 A | Hospitius Comes | 581 | Nicæ in Gal. |
| 22 b | Romanus Abbas | 204 | Comanæ |
| 23 c | Desiderius Episc. | 612 | In Gallia |
| 24 d | Joanna | 35 | In Judæa |
| 25 e | Urbanus Papa | 233 | Romæ |
| 26 f | Eleutherius Papa | | Romæ |
| 29 g | Joannes Papa 55. | 526 | Romæ |
| 28 A | Germanus Episc. | 378 | Parisiis |
| 29 b | Theodosia M | 308 | Cæs. Philipo |
| 30 c | Felix Papa 17. M | 275 | Romæ |
| 31 d | Petronilla Virgo | 69 | Romæ |

JUNIUS habet dies XXX

Lic
Dies

Annus Locut.

| | | | |
|-----|----------------------|------|----------|
| 1 e | Simeon Conf | 1035 | Treviris |
| 2 f | Marcell. Presbyt. M. | | |
| 3 g | Clotildis Reg | 355 | Parisiis |
| 4 A | Optatus Episc. | 306 | Milevi |
| 5 b | Bonifacius Episc. | 754 | Faldæ |

6 c

- 6 c Norbertus Episc. 1134 Magdeburg.
 7 d Robertus Abbas 1159 In Anglia
 8 e Medardus Ep. M. 566 Novioduni.
 9 f Primus & Felic. M. 303 Romæ
 10 g Maurinus Abbas Colonia
 11 A Barnabas, Ap. M. 62 In Cypro
 12 b Antonina M. 303 Niceæ
 13 c Anton de Padua C. 1231 Patav i
 14 d Basilus Magnus 378 Cesareæ
 15 e Vitus M. 203 Parisiis
 16 f Ludga dis Virg. 1246 In Brabantia
 17 g Adolphus Episc. 650 Tracta
 18 A Marcus & Marc M. 284 Romæ
 19 b Genat. & Proth M. 169 Mediolani
 20 c Sylvernus Para M. 540 In Pont. Inf.
 21 d Aloys Gonz J. 1591 Romæ
 22 e Paulus M. 451 Romæ
 23 f Agrip. V. M. Vigil. 451 Romæ
 24 g Natibitas S Joa. Bapt. 266 In Mont Judi
 25 A Prosper Rhegi
 26 b Joao & Paulus M. M. 466 Romæ
 27 c Ladislaus Re Ung. 161 Varadini
 28 d Leo II Pap. Vigilia 1095 Romæ
 29 e Petrus, Paulus. i. post 684 Romæ
 30 f Pauli Commem. 69.

JULIUS habet dies XXXI.

Dies.
Lij.

Annus Locus

- 1 g Romulus Episc. 775 Mechlinia
 2 A Vispatio B. M. in Monte Ju. 4 c

- 3 b Heliodorus Episc. 181 Altin
- 4 c Udalricus Episc. 973 August
- 5 d Numerianus Ep. 640 Trevis
- 6 e Isaias Propheta in Judea
- 7 f V Vilibaldus Ep. 725 Eistettensis
- 8 g Kilianus Episc. M. 686 Herbi poll
- 9 A Cyrillus Episc. M. 254 Cortyn
- 10 b Felice cum 7. filiis 171 Rom
- 11 c Pius Papa XL. M. 107 Rom
- 12 d Nab. & Felix MM. 303 Colonie
- 13 c Anacleus P. 5, M. 112 Rom
- 14 f Henricus Imper. 1024 Bamberg
- 15 g Apostolorum divisio 33 Hierosoly.
- 16 A Faustus M. 252 Rom
- 17 b Alexius Conf. 410 Rom
- 18 c Fridericus Episc. 238 Colonie
- 19 d Asenius Abbas 440 in Aegypto
- 20 e Margaretha V. M. 290 Antiochia
- 21 f Praxedes V. M. 164 Rom
- 22 g Maria Magdalena 84 apud Massil
- 23 A Apollinaris Episc. 75 Ravenn
- 24 b Christin. V. M. *Vigil* 300 Palermi
- Jacobus Apostolus 44 Compstela
- 25 c Christophor 245 in Lycia
- 26 d Anna Mater Mariæ in Nazareth
- 27 e Panthaleon M. 311 Nicomedia
- 28 f Innocentius P. 385 Rom
- 29 g Martha Virg. 84 Tarasci
- 30 A Abd. & Sen. M. M. 254 Rom
- 31 b Ignat. Conf. S. J. P. 1556 Rom

AUGUSTUS habet dies XXXI.

Dies.
Lit.

Annus Locus

- 1 c Petri vincula 44. Romæ
- 2 d Pott. Steph P. M. 260 Romæ
- 3 e Inventio S. Steph. 412 Hierosol.
- 4 f Dominicus Conf. 121 Bononiæ
- 5 g Dedic. Mar ad niv 367 Romæ
- 6 A Transfigurat Christi 31 in Monte Tab.
- 7 b Donatus Episc. 361 Aretii
- 8 c Cyriacus M. 298 Romæ
- 9 d Romanus M. Vigil. 261 Romæ
- 10 e Laurentius Mart. 261 Romæ.
- 11 f Iulian V. M. 25 Romæ
- 12 g Clara V. 1253 Assisi
- 13 A Hippolytus M. 261 Romæ
- 14 b Euseb. Presb Vigil. 318 Romæ.
- 15 c Assumptio B. V. M. 57
- 16 d Rochus Conf. 1317 Venetiis
- 17 e Bonifacius M. 434 in Africa
- 18 f Helena Imperat. 340 Romæ
- 19 g Juliana Martyr. 192 Romæ
- 20 A Bernardus Abbas 1153 in Clara Val.
- 21 b Steph. Rex Ungar. 1047 Albe Regale.
- 22 c Timotheus Mart. 311 Romæ
- 23 d Zachæus Ep. Vigil. 112 Hierosoly.
- 24 e Bartholomæus Apost. 73 in India
- 25 f Ludovicus Rex 1270 Parisiis
- 26 g Zephyr. P. M. 211 Romæ
- 27 A Euthalia V. 253 in Sicilia
- 28 c Augustinus Episc. 433 in Africa 29 c

29 c Decoll. S. Jean Bapt. 31 Hierosoly.
 30 d Fel & Adauet M. M. 300 Romæ
 31 e Paulinus Episc. 356 Treviris

SEPTEMBER habet dies XXX.

Dies
Lit

Annus. Locust

- | | | | |
|------|----------------------|------|--------------|
| 1 f | Ægidius Abbas | 710 | Narbonæ |
| 2 g | Maxima M. | 303 | Romæ |
| 3 A | Serapia V. M. | 722 | Romæ |
| 4 b | Rosalia V. | 1160 | Panorm. |
| 5 c | Victorinus Episc. M. | 100 | Romæ |
| 6 d | Zacharias Proph. | | In Chaldaea |
| 7 e | Regina V. M. | 240 | Augustod |
| 8 f | Nativitas B. V. M. | | |
| 9 g | Gorgonius | 303 | Nicomedia |
| 10 A | Nicolaus Tolent | 1306 | Tolentini |
| 11 b | Protus & Hyacin. | 263 | Romæ |
| 12 c | Guido | 1112 | Anderlaci |
| 13 d | Maurilius | 394 | Andegavi |
| 14 e | Exaltat. S. Crucis | 628 | Hierosoly. |
| 15 f | Aper Episc. | 420 | Tulli |
| 16 g | S. stigmatum imp. | 1224 | In M. Alves. |
| 17 A | Lambert s. | 698 | Leod |
| 18 b | Thom a villa nov. | 1551 | Valentia |
| 19 c | Januarius E. M. | 300 | Puteolis |
| 20 d | Eustachius M. Vigil | 120 | Romæ |
| 21 e | Mattheus Apost. | 41 | In Æthiopia |
| 22 f | Linus P. | 80 | Romæ |
| 23 g | Gerardus Episc. | 1047 | Prope Bud. |
| 24 A | Cleophas | 34 | In Emmaus |
| 25 b | | | 26 c |

- 26 c Cypr & Just. M. M. 250 Nicomedia
 27 d Cosm & Dam. M. M. 287 Aegæ
 28 e Vencesl Rex M. 639 Praga.
 28 f Michael Archân.
 30 g Hieronymus Presb. 420 Roma

OCTOBER habet dies XXXI.

| Die. | Lit. | Annus | Locus. |
|------|------|------------------------|------------------|
| 1 | A | Remigius Episc. | 499 Rhemis |
| 2 | b | Leodeg. Episc. | 685 Atr. bat. |
| 3 | c | Candidus M. | Romæ |
| 4 | d | Franciscus Conf. | 1101 Aulisi |
| 5 | e | Placidus Abbas | 54 Messanæ |
| 6 | f | Bruno Conf. | 1101 In Calabria |
| 7 | g | Marcus P. 35 | 336 Romæ |
| 8 | A | Brigitta Vidua | 1473 In Suecia |
| 9 | b | Gereon M. | 119 Parisiis |
| 10 | c | Franciscus Borg. S. J. | Romæ |
| 11 | d | Gumarus M. | 775 Lyxæ |
| 12 | e | Maximilianus Ep. | In Austria |
| 13 | f | Theophilus Episc. | 110 Antiochiæ |
| 14 | g | Callistus P. M. | 226 Romæ |
| 15 | A | Tereba Virg. | 1582 Albæ |
| 16 | b | Gallus Abbas | 640 apud Arbon. |
| 17 | c | Ne con Episc. | 13 Antiochiæ |
| 18 | d | Lucas Evang. | 58 In Bithynia |
| 19 | e | Lucius Marty. | 164 Romæ |
| 20 | f | Caprasius | 503 In Gallia |
| 22 | g | Ursula cum Virg. | 1100 383 Colonia |

- 22 A Cordula V. M, 383 Colonia
 23 b Serverinus Episc. 400 Burdigala
 24 c Proclus Episc. 434 Constantinop.
 25 d Crispinus Crispinia: 484 Roma
 M. M.
 26 e Evaristus P, M, 111 Roma
 27 f Vincentius Sabina Abula
 Vigilia.
 28 g Simon & Judas Ap. 78 In Perside
 29 A Narcissus Episc. 300 Hierosoly
 30 b Marcellus M, 198 Tingi.
 31 c V Volffg. Ep. *Vigilia* 998 Ratisbona;

NOVEMBER habet dies XXX.

| | | | |
|------|------|-------|-------|
| Dies | Lit. | Annus | Locus |
|------|------|-------|-------|

- 1 d Festum omnium SS.
 2 e Commem, defunct.
 3 f Hubertus Episc. 751 Leodii
 4 g Carolus E. romaeus 1584 Mediolani
 5 A Zach, & Elisabeth
 6 b Leonardus Conf. 559 Lemovicis
 7 c Engelbertus Episc. 1125 Colonia
 8 d 4 Coronati Frat, 1303 Roma
 9 e Theodorus miles 1304 Amasca
 10 f Nympha M. Roma
 11 g Martinus Episc. 402 Tironis
 12 A Marianus Pap 75. M, 654 Roma
 13 b Stanislaus Kostka S. J. 1568 Roma
 14 c Serapion M, 252 Alexandria
 15 d Lepol Arch, Aust, 1131 Claustr, Nee 160

16 e Edmundus Episc, 1246 Cantu r,
 17 f Gregorius Tauma 288 Neo Cesar,
 18 g Maximus Episc, 378 Moguntia
 19 A Elisabeth, Reg, Ung, 1231 Marpurg
 20 b Simplicius Episc, 500 Verona
 21 c Presentat B, V, M, Hierosoly,
 22 d Cecilia V, M, 224 Roma
 23 e Clemens Pap, 4, M, 102 Roma
 24 f Chrysogonus M, 303 Aquile
 25 g Catharina V, M, 307 in Monte Sin,
 26 A Conradus Episc, 976 Constantia
 27 b Facundus M, 204 in Gallecia
 28 c Rufus M, 303 Roma
 29 d Saturninus. Vigil. 303 Roma
 30 e Andreas Apostolus 69 Achaia,

DECEMBER habet dies XXX.

Dies
Lit.

Annus Locus,

1 f Eligius Episc, 665 Noviom
 2 g Bibiana V, M, 352 Roma
 3 A Franciscus Xav, S. J, 1552 in Sanciano,
 4 b Barbara V, M, 273 Nicomedia
 5 c Crispina V, M, 173 Thebest,
 6 d Nicolaus Episc, 326 Myra
 7 e Ambros, Ep, Vigil, 397 Mediolani
 8 f Innocent. Conc. B. V.
 9 g Leucadia V, M, 305 Toleti
 10 A Eulalia V, M, 303 Emerita
 11 b Damasus Pap, 384 Roma
 12 c Synesius M, 275 Roma

13 d

- 13 d Lucia V. M, 303 Syracusa
 14 e Nicaius Episc. 451 Roma
 15 f Valerianus Episc, 458 Roma
 16 g Everhardus Episc, 755 Dyson;
 17 A Lazarus Episc, 80 Massilia
 18 b Gratianus Episc, 180 Furonis
 19 c Nemefius E. M, 253 Alexand-ia
 20 d Christia Ep. *Vigil*, 1049 Tolosa
 21 e Thomas Apostolus 73 Calamina
 22 f Spyridion M. 253 Alexandria
 23 g Victoria V, M. 153 Roma
 24 A Adam & Eva, *Vigil*
 25 b Nativitas Christi 1 in Berleth
 26 c Stephanus Protomart. 34 Hierosoly
 27 d Joannes Apost. Evan. 101 Pathari
 28 e Innocentes M, M, 1 in Berleth,
 29 f Thomas Eo Cant. 1163 in Anglia
 30 g David Rex Proph. Hierosoly
 31 A Sylvester Pap 14 335 Roma

SSSSSSSSSSSSS
 SSSSSSSSS
 SSSSS
 SSSS
 SSS
 SS
 S

INDULGENTIA.

A Sede Apostolicâ concessæ.
*Sodalibus Congregationum B. V. M. in
Domibus & Gymnasiis Societatis JESU erigendi
solitarum: excerpta ex Bulla
Gregorij XIII. & Sixti V.*

INDULGENTIA

Certis singulorum Mensium diebus concessæ.

MENSE IANUARIO.

1. Circumcisionis die, Plenaria
7. Epiphania Domini, plenaria,
14. In Festo S. Felicis, Indulgentia statim,
Urb, Rom,
16. Sancti Marcelli, plenaria.
17. Sancti Antonij Abbas: plenaria,
18. S. Priscæ Virgi Mart: plenaria,
21. S. Agnetis Mart, stationum Urbis,
Romæ.

22. SS. Vincentii & Anastasij, 40. anni,
25. Conversionis S. Pauli, plenaria
28. S. Agnetis secundo ducenti anni,

FEBRUARIO

1. Purificationis B. V, plenaria,
5. In Festo S. Agathæ 28. anni,
22. Carderæ S. Patri, plenaria,
24. S. Matthiæ Apostoli, plenaria,

MARTIO,

7. San

Congrega B. V. M.

7. Sancti Thomæ Aquin, plenaria,
12. S. Gregorij Papæ, plenaria,
19. Sancti Ioseph, plenaria,
21. Sancti Benedicti, 200, anni,
24. Vigil. Annuntiat: Plenaria,
25. Annuntiationis Beatæ Virginis Mariæ,
plenaria,

A P R I L I.

23. S. Georgij Mart. plenaria,
15. Marci Evangelistæ, plenaria,

M A I O.

Singulis diebus Domini, mensis huius
plenaria,

1. SS. Philippi & Iacobi, plenaria,
3. Invenio sanctæ Crucis, plenaria,
6. Sancti Ioannis ante portam Latinam,
plenaria,
8. Apparitionis Sancti Michæelis Archangeli,
plenaria

Ascensionis Christi, plenaria:

I U N I O.

1. S. Marcellini, inuulgentiæ Stationum
Urbis Romæ,
15. SS. Viti, Modesti, & Crescentiæ, cen-
tum annorum,
14. Nativit, S. Ioan. Baptiste plenaria
16. SS. Ioannis & Pauli Martyrum,
Indulgent, Stat, Urb, Rom,
23. S. Leonis Papa, eadem,

29 SS.

Indulgentiæ

- 29, SS. Petri & Pauli, plenaria,
30, Commemorati S. Pauli, plenaria,

I V L I O.

- 1, Vigilia Visitationis, plenaria,
2, Visitationis B, M, V, plenaria,
3, Octava ejusdem Festi, plenaria,
14, S. Benaventura, plenaria,
17, S. Alexii, plenaria.
20, S. Margaritæ Stat: Urb. Rom,
21, S. Praxedis, Stat: Urb. Rom,
22, S. Mariæ Magdal, plenaria,
23, S. Apollinaria, 100 plenaria
24, S. Christinæ, 40 annorum,
25, S. Iacobi Apostoli, plenaria,
26, S. Annæ, plenaria,
27, S. Pantalæonis, 48 annorum,
28, SS. Nazarij & Celli, 3 ann,
30, S. Apollon & Seneæ: Statio Urbis Romæ,

A V G V S T O.

- 1, S. Petri ad vincula, plenaria
3 Inventio S. Stephani, plenaria,
4, S. Dominici Confess, plenaria,
5, B. Mariæ ad Nives, plenaria,
8, SS. Cyriaci, Largi, & Smaragdi Mart:
plenaria,
10, S. Laurentij Mart: plenaria,
21, S. Claræ Virginis, plenaria,
24, Vigilia Assumptionis B, V, ad Vesperas,
plenaria,

25, Assum-

Congregat B, M, V,

4

25, Assumptionis B, V, Maria, plenaria,
Singulis diebus ab Assumptione ad Septemb
43 ann,

Ad Nativitatem, plenaria,

Lominica infra Octav, Assumpt, plenaria,

22, Octava Assumpt, plenaria,

24, Bartholomaei, plenaria,

28, S, Augustini, plenaria,

29, Decollationis S, Ioan, plenaria,

S E P T E M B R I

7, Vigi: Nativit, B, V, plenaria,

8, Nativitas B, V, plenaria,

14, Exaltationis S, Crucis, plenaria,

20, SS, Eustachij, &, Stationum Urbis
Romæ

21, S, Matthæi Apost, plenaria,

28, SS, Cosmæ & Damiani, Stationum,
Urbis Romæ,

29, S, Michaelis Archang, plenaria,

O C T O B R I,

4, S, Francisci, plenaria,

8, S, Lucæ Evangelistæ, plenaria,

28, SS, Simonis & Iudæ, plenaria,

N O V E M B R I,

1, Festo die Omnium SS, plenaria,

9, Dedicatio Salvatoris, plenaria,

11, S, Martini, 3 annorum,

18, Dedic: Basilicæ S, Petri, plenaria,

21, Presentatio B, Maria, V, plenaria,

25, S, Cecil

Indulgentia

- 22, Cæcilie Virg. Marti plenaria,
23, S. Clementis Papæ, plenaria
25, S. Catharinæ stat. Urb. Romæ,
30, S. Andree Apostoli; plenaria,

D E C E M B R I,

- 4, S. Barbaræ stat. Urb. Rom,
5, S. Sabbatis 100. ann,
6, S. Nicolai, plenaria,
7, Ambrosij, plen. & propter Vigiliam
Concepti B. V. ad Vesperas.
8, Conceptio B. Mariæ V, plenaria,
21, S. Thomæ Apostoli 300. ann,
24, Vigilia Natalis Domini, plenaria,
25, Die Nativit. Domini, in prima & secun-
da Missa, plenaria,
26, S. Stephani, plenaria,
27, S. Ioannis Evang plenaria

Tum verò liberatio animæ ab igne Puri-
gatorii

- 28, SS. Innocentium, plenaria,
31, S. Sylvestri, stat. Urb. Rom,

I N D U L G E N T I Æ.

Stationum Urbis. Romæ,

in Festis mobilibus

Singulis diebus Dominicis Adventis,
Singulis diebus quatuor temporum Ade-
ventus.

Dominica septuagesimæ,

Dominica sexagesimæ,

Ab initio Quadragesimæ ad Festum
Paschatis, singulis diebus consequuntur
Sodales Indulgentias concessas iisdem die-
bus stat: Urb: Rom:

Diebus sequentibus promerentur Sodales
indulgentias iisdem diebus concessas visi-
tantibus Ecclesias.

Die Lunæ post Cineres, primâ Dominica
Quadragesimæ, die Lunæ post secundam &
post tertiam Dominicam, item die Martis
sequent, die Lunæ sequenti, Die Lunæ post
5. Dominicam de Martis sequenti, die Lu-
næ atque die Veneris Dominicæ tertie in
Quadragesima. A Paschate consequuntur
indulgent: stat: Urb: Rom:

Die ipso Paschatis ac sequenti, nec non
usque ad Dominicam in Albis inclusive
preterquam die Martis.

Die Lunæ majorum Litaniarum Ascensi-
onis Domini, Dominica Pentecostes, singu-
lisque diebus Octavæ ad Sabbathū inclusive.

*Liberatio animæ è Purgatorio, diebus
hiscæ conceditur.*

Die Festo Sancti Ioannis Evangelistæ 26.
Decembris.

Dominica Septuagesimæ.

Die Martis post primam Dominicam
Quadragesimæ.

Die Sabbathi Post Dominicam Passionis,

Die Mercurij à Falchate.

Die Martis Pentecostes.

Die Sabbathi ab eodem festo.

Supra dictas omnes Indulg & Singulas earum consequentur Sodales, si puri à peccato mortali, Ecclesiam Societatis IESU, si ea fuerit, ubi illi morantur, alioquin aliam quamvis Ecclesiam seu Capellam devotè visitaverint, & ibi septies orationem Domini & salutationem Angelicam septies recitaverint Indulgentiam plenariam.

Ad maiorem cognitionem dictarum Indulg: sciendum est, illas easdem esse cum ijs, quæ dicuntur Indulgentiæ stat: Urb: Rom: seu esse ipsas Ind: stat: Rom.

Scilicet, devotè visitantibus aliquot Ecclesias Urb: Rom: celebriores, magnæ olim à Rom: Pontificibus concessæ sunt varij anni diebus Indulgentiæ, quæ Rationum Lib: Rom: nuncupantur: illas ergo omnes Gregorius XIII. singulari privilegio concessit Sodalibus Congregationum B: V: recitantibus eo modo quo paulo ante dictum est, iisdem diebus septem Pater & Ave, ut patet, ex ejusdem Greg: Bulla.

Alia Indulgentia Plenaria.

Quas consequuntur Sodales, 1. Quo die recipiuntur in Sodalitatem. 2. In articulo mortis, dummodo verè poenitentes & confessi

Congregat: B: V: M:

festi ijs diebus communicaverint.

Quicumque Sodales, & qui sunt extra Sodalitatem Christi fideles utriusq; sexus vere poenitentes & confessi, ac sacra communione refecti, Ecclesiam, seu Capellam Congregationis in die Annuntiationis B: V. vel alterius solennitatis, invocationis seu tituli uniuscuiusque Sodalitatis, à primis ejusdem diei vespers, usque ad solis occasum ejusdē festivitatis devotè visitaverint: & inibi pro Reip: Christiane conservatione & augmento, pro hæreseon extirpatione, Principum Christianorum mutuâ & universali Pace, ac Romani Pontificis prosperitate oraverint, vel alias preces, prout unicuique suggeret devotio, ad Deum piè effuderint, Indulgentiam plenariam consequentur.

Indulgentiâ unius Anni consequuntur Sodales,

1. Quoties Corpora Defunctorum ad Ecclesiasticâ sepulturâ prosecuti fuerint.
2. Infirmi vel impediti, qui audito signo campanæ genu flexo. (si per infirmitatem licebit) Orationem Dominicam, & salutationem Angelicam pro salute animæ defuncti vel Corporis infirmi recitaverint.
3. Qui cœtibus, tum publicis, tum privatis, pijs officiis, spiritualibus colloquiis & exhortationibus interfuerint.
4. Qui conscientiam suam diligenter

vesperi examinaverint.

5. Qui pauperes infirmos, vel carcere detentos visitaverint.

6. Qui pacem inter inimicos conciliaverint.

Has omnes Indulgentias, consequi possunt Sodales etiam dum commorantur in locis, in quibus nec Ecclesia Societatis IESU est, nec Congregatio: dummodo opera, quæ Sodales præsentis Congregationi, pro singularum Indulgentiarum consecutione, observare debent, ipsi exequantur.

Advertendum autem est, neminem in peccato mortali existentem consequi posse Indulgentiam ullam, quare necesse est ad ejus consecutionem contritione vera cum proposito confitendi vel pœnitentiæ Sacramento, peccati remissionem sibi prius conciliet, nam etiam contritione sola, peccatū mortale deletur, manente tamen obligatione. Illud, etiam ante delerum; clavibus Sacerdotis per confessionem subijciendi.

P R E C E S

Dicenda in Principio.

C O N G R E G A T I O N I S.

Veni Sancte Spiritus. reple tuorum corda fidelium, & tui amoris ignem in eis accende.

Kyrie

Kyrie eleison, Christe eleison,

Kyrie eleison, Pater noster.

V. Et ne nos inducas in tentationem,

R. Sed libera nos a malo,

V. Memento Congregationis tuæ.

R. Quam possedisti ab initio.

V. Domine exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus.

Mentes nostras, quæsumus, Domine, lumine tuæ Claritatis illustra: ut videre possimus quæ agenda sunt; & quæ recta sunt agere, valeamus. Per Christum, &c:

In fine Congregationis.

Kyrie eleison, Christe eleison.

Kyrie eleison, Pater noster &c:

V. Et ne nos inducas in tentationem,

R. Sed libera nos a malo.

V. Confirmet hoc Deus, quod operatus est in nobis.

R. A Templo sancto suo quod est in Hierusalem.

V. Domine exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus.

Presta nobis quæsumus, Domine, auxilium gratiæ tuæ: ut quæ te Auctore facienda cognovimus, te operante impleamus. Per Christum Dominum nostrum Amen.

Retribuere dignare Domine benefactoribus nostris vivis atque defunctis vitam æternam.

Oratio Sodalitatis.

SANCTA MARIA, Mater DEI & Virgo, Ego N. te hodie in Dominam, Patronam & Advocatam eligo firmiterque statuo ac propono, me nunquā te derelicturum; neque contra te aliquid unquam dicturum aut facturum, neque permissurū, ut à meis subditis aliquid contra tuum honorem unquam agatur, Obsecro te igitur, suscipe me in servum perpetuum, ad sis mihi in actionibus omnibus meis, nec me deseras in hora mortis, Amen.

*II. Pro perseverantia in cultu DEI
& B. V. MARIE.*

DEUS, qui nos sub alis Sanctissimæ Matris Filij tuæ constitutos ad bravium supernæ vocationis accēdis, pectoribus nostris purificandis illabere, & gratiam nobis qua in servitio ejusdem sacratissimæ Virginis Mariæ perseveremus, infunde, ut protectionis ejus muniti præsidis, quod te donante promissimus, impleamus: & nostri propositi executores effecti, ad ea, quæ perseverantibus in te, promittere dignatus es, pertingamus.

PIUM MANE

SODALIS

MARIANI.

Dignissime DEUS, ego te misera & in-
dignissima creatura tua, DEUM meum
summum bonum amo, aspiro, adoro, glo-
rifico, meque in conspectu tuae dignissimae
Majestatis quantum possum, & tu donas,
projicio, Gralias ago tibi pro beneficijs,
hac potissimum nocte mihi concessis Et ti-
bi ò pretiosissima Virgo MARIA. Sancte
Angele Custos, S: Patroni mei.

Reddo me iterum Divinissimae tuae Boni-
tati, O Beata Trinitas, & commendo me
Tibi totum cum corpore & anima, Tibi
quoque Pretiosissima Parens Virgo MARIA
S. Angele Custos, SS. Patroni mei.

Doleo quòd te summum bonum offen-
derim, quem amo super omnia.

Firmiter statuo peccata omnia vitare, sed
maximè hoc (Certum aliquod, in quod pas-
sim relaberis pone) simulque cavere occasi-
ones. Tuam tantummodò mihi, ò DEUS
elargiri digneris gratiam, pro qua tota mè-
dicitatis meae abyssò, tibi supplico Deus di-
gnissime Quid enim sum sine te nisi dux
in nihil, quod est peccatum.

B

Quid

Quid sum mihi, sine te O IESU, nisi regio egestatis, terra sterilis, inopix & malitix ferax,

Omnes actiones meas diurnas, dicta & cogitata mea offero in unione Passionis & meritorum tuorum, ad maiorem tuum O Sacratissima Trinitas, honorem & gloriam gustum, & consolationem Beatissimi Cordis tui.

In honorem Beatissimæ Virginis Mariæ tuæ, in honorem Sancti Angeli Custodis, SS. Patronorum meorum.

In gratiarum actionem pro beneficiis mihi, meisque à te concessis,

In satisfactionem pro peccatis meis & meorum.

Ad impetrandas mihi meisque necessarias gratias animæ & corpori utiles,

VOlo dignissime DEUS ab hoc tempore omnia facere, eò motivò quò tu vis, & quia tu vis, illa fieri à me, idq; propter omnium mandatorum tuorum impletionem propter virtutum Theologicarum, & moralium, Spiritualium, Donorumque & fructuum Spiritus Sancti in omni congruo mihi gradu affectionem exercitationem, incrementum propter gratiæ tuæ in me confirmationem, propter totius mundi auxili-
um

um propter omnium Sanctorum, Angelorum,
Preciosissima Parentis, tum ô IESU hono-
rem, ac imitationem, propter omnimodam,
sue dignitatis exaltationem, mei denique
universalem annihilationem,

Ad Beatissimam Virginem

M A R I A M

Preciosissima Parens Virgo MARIA, Do-
mina mea, Tibi ego mancipium tuum
vilissimum, omnes actiones meas diei huius,
& vitæ totius, commendo, easque tuis sa-
cratissimis manibus & meritis, gratiis, &
donis, exornandas, atque Sanctissima Trini-
tatis conspectui, pro me offerendas com-
mitto: quatenus etiam a me sunt, indignis-
simæ ejus conspectui, sunt.

Propositum castæ mentis quotidianum.

EGO N. coram castissima Virgine MA-
RIA, Angelo Custode, & tota curia
cælesti, Tibi DEUS cordis mei, quem ubiq;
præsentem agnosco, & sanctè veneror, me
fisco, & protektor, me nolle unquam con-
sentire, non modo facinori committendo,
sed ne cogitando quidem ulli corpori delecta-
tioni, quantumvis adverbium vim ingerant,
& carnis rebellio intingat.

Detestor, & execror omnes illas festa-

res, malo mori quam fœdari & malo ut in
Infernum vivus descendam quam ut turpi
delectationi ad momentum consentiam, Ita
decretum, ita constitutum est in animo
meo, Adsis ô MARIA Domina mea, ô An-
gele Custos mi. adeste ô Patroni castitatis
meæ Tuque ô IESU pie seminator casti con-
siliis voluntatem meam confirma; quod per
sanguinem tuum humillime rogo, Amen.

*Ad Sanctam Sydenem pro liberatione
Anima e Purgatorio.*

DEUS qui nobis in Sancta Sydone, quâ
corpus tuum Sacratissimum de Cruce
depositum à Ioseph involutum fuit, Passio-
nis tue vestigia reliquisti, concede propiti-
us, ut per mortem & sepulturam tuam ad
resurrectionis gloriam perducamur, Amen.

EXERCITIUM SPIRITUALE.

*Ab omni fidei Christiano ad minimum
semel de die attentè dicendum.*

ADoro te, Sanctissima TRINITAS, PA-
TER & FILI & SPIRITUS Sanctus,
tres personæ, unus & solus DEUS.

Deiicio me in abyssum mei nihili sub con-
spectu Divinæ Majestatis Tuae.

Credo

Credo firmissimè, paratus mille vitas profundere, in contestationem omnium eorum quæ nobis in sacra Scriptura revelantur, & per veram Ecclesiam tuam credenda proposuisti.

Omnem spem meam in Te colloco & quidquid possum habere boni siue spiritalis, siue corporalis, & in hac & in altera vita, id totum desidero spero, & volo, solum consequi de Tua manu **DEUS** meus Vita mea, & unica spes mea.

Consigno Tibi hodie, & in perpetuum, corpus & animam meam, omnes potentias meas, memoriam, intellectum, voluntatem, & omnes sensus meos.

Protestor me non consentire neque consensurum unquam, quantum in me est, in ullam rem quæ fiat vel cum minima offensa Tuae Divinae Majestatis.

Propono firmissimè impendere omne esse meum; facultates ac vires meas, ad servitium & gloriam Tuam paratus sum suscipere, quascunque adversitates mihi Paterna Tua manus immiserit, ad dandum gustum Beatissimo Cordi Tuo.

Vellem me totum quantus sum, impendere & procurare, ut ab omnibus Tibi serviat, atque omnes homines te glorificent, & ament **DEUM** Creatorem ipsum.

Gaudeo summè de tua æterna felicitate,
& exulto de Tua tam magna gloria, in
cælo & in terra.

Gratias tibi ago infinitas, pro innumeris
beneficiis, quæ mihi & toti mundo collata
sunt, & in eum incessanter à benignissima
Tua Providentia conferuntur.

Amo tuam infinitam Bonitatem propter
seipsam, ex totò affectu Cordis, & Animæ
meæ; & vellem, si possem, amare eo amore,
quo Te amant Angeli & homines iusti, cum
quorum amore, conjungo imperfectissimū
amorem meum. Offero Divinæ Majestati
Tuz, in unione meritorum passionis vitæ
& mortis Christi, ex nunc pro seipser, o-
mnia opera mea, pretiosissimò Sanguine IL-
LUSU, Redemptoris lota & involuta.

Volo etiam omne illud, quod possum,
offerre in penitentiam & satisfactionem
meorum peccatorum.

DEUS meus, cum, Tu sis infinitè dignus
omni amore & servitio, siquidem Tuus es,
qui es, doleo quantum possum maxime, de
omnibus meis peccatis, illaque detestor su-
pra omnia alia mala: pero humillimè veniā
facioque firmissimum propositum, nunquā
offendendi Tuam bonitatem in æternum.

In Tua vulnera me projicio O IESU ibi
me absconde donec mihi largiaris gratiam
videndi

videndi Tui, & amandi in æternum Amen.

AD DOMINUM IESUM CRUCIFIXUM

O Domine IESU Chrifte per amaritudinem illius passionis, quam sustinuisti in Cruce, maxime in illa hora quando benedicta anima Tua egressa est de Sancto Corpore Tuo, miserere animæ meæ, maxime in egressu suo, Amen.

LITANIÆ
AMORIS

Dulcissimi JESU Amoris nostri.

Kirie eleyson, Chrifte eleyson,
Kyrie eleyson,
Christe audi nos Christe exaudi nos
Pater de cælis DEUS, Miserere nobis.
Fili Redemptor mundi DEUS, Miserere
nobis.
Spiritus Sancte DEUS, Miserere nobis.
Sancta Trinitas unus DEUS, Miserere nobis
Dulcissime IESU immense Fons amoris.
Dulcissime IESU amantium vita,
Dulcissime IESU indeficiens Amor,
Dulcissime IESU Auctor & intutor amoris
Dulcissime IESU qui non potes non amare,
Dulcissime IESU amantium Rex.
Dulcissi-

Da ut amare

Dulcissime IESU Dux amantium,
 Dulcissime IESU plenitudo amoris,
 Dulcissime IESU qui omnem amorem
 superas,
 Dulcissime IESU causa finalis & efficiens
 amoris,
 Dulcissime IESU amor fortis,
 Dulcissime IESU languentes animas a-
 more reficiens,
 Dulcissime IESU amicos tuos visitans
 amore,
 Dulcissime IESU amantium Robur, For-
 titude, Firmamentum,
 Dulcissime IESU amator cuius pax exsu-
 perat omnem sensum,
 Dulcissime IESU amantium portus,
 Dulcissime IESU qui es ipsissimus amor,
 Dulcissime IESU amor fidelissime,
 Dulcissime IESU amator vigilantissime,
 Dulcissime IESU amantium Custos &
 Conservator,
 Dulcissime IESU amantium Rector &
 Gubernator,
 Dulcissime IESU qui omnes perficis
 amatores,
 Dulcissime IESU amantium liberalissime,
 Dulcissime IESU semper amabilis,
 Dulcissime IESU pulchra dilectionis or-
 dinator.

Da ut amem te & amem super omnia, Da ut amem te & amem super

Dul-

Dulcissime IESU amator eterne,
Dulcissime IESU amator increate,
Dulcissime IESU casti amoris conditor,
Dulcissime IESU ignis amoris contumens,
Dulcissime IESU amator violente,
Dulcissime IESU incendium vera dile-
ctionis,
Dulcissime IESU virtus & vigor aman-
tium,
Dulcissime IESU amantium gloria,
Dulcissime IESU amoris merces,
Dulcissime IESU sol amoris,
Dulcissime IESU amator in carnate,
Dulcissime IESU amoris Sponse,
Dulcissime IESU amor spinis coronate.
Dulcissime IESU amor crucifixæ,
Dulcissime IESU amoris victima,
O amoris victima,
A primo instanti Incarnationis tue o-
mni momento vitæ tue, amoris victi-
ma, omni momento acerbissima passi-
onis tue & præsertim in cruce sed ma-
ximè in illa hora, quando nobilissima ani-
ma tua egressa est de benedicto Corpore tuo,
ex infiniti amoris excessu & immensis dolo-
ribus, O Amoris victima.

Dulcissime IESU: Abyssus amorum pul-
chritudinum & deliciarum omnium.

Dulcissime IESU Rex gloriæ, Verbum
Patris

Dant amen te & amen super omnia,

Patris, Sapientia increata, Beatitudo Felicitas, Vita, Virtus, Voluptas, Gaudium, Corona & amor Sanctorum omnium, Cordis mei amor, Vita, desiderium, & omne bonum, Da ut amem te & amē super omnia.

Dulcissime IESU ut amemus te suaviter, fortiter, & prudenter, Te rogam⁹ audi nos.

Dulcissime IESU, ut in amore tuo simus fervidi, circumspēcti & invidi, Te rogam⁹ audi nos.

Dulcissime IESU, ut diligamus te non solum linguā sed opere & virtute, Te rogam⁹ audi nos.

Agnus DEI qui tollis peccata mundi, per dilectionem tuam, Parce nobis Domine.

Agnus DEI qui tollis peccata mundi, per amorem tuum, Exaudi nos Domine.

Agnus DEI qui tollis peccata mundi, per tuam charitatem tuam, Misereere nobis.

Kyrie eleyson, Chriſte eleylon.

Kyrie eleylon.

O R E M U S

A Mabilissime Domine IESU Chriſte, qui non potes non amare: per violentiam Dulcissimi amoris tui compelle rebellem animam meam ad te amandum, ut tibi seruiam, tibi placeam, te super omnia diligam,
tua

tua Præcepta, tua consilia adimpleam, ut
amori tuo immoriar, qui, amore amoris mei
dignatus es mori, Qui vivis & regnas Amor
meus cum Patre & Spiritu S. in amore sem-
piterno, Amen.

Dulcissime IESU amantium vita, & A-
moris victima, Abyssus amorum, pulchritu-
dinum & deliciarum omnium cum Patre &
Spiritu Sancto amo Te, & amo super omnia
O quando erit illud, quando! Ut videam,
amem, laudem, adorem te in essentiali tua
gloria omnes beante! O quando erit illud,
Quando?

Litania de Passione Christi.

Krie eleison, Christe eleison, Kyrie elei-
son IESU Christe audinos.

JESU Christe exaudinos.

| | |
|--|-----------------|
| Pater de cælis DEUS | Miserere nobis. |
| Fili Redemptor mundi DEUS | miserere: |
| Spiritus sancte DEUS | miserere: |
| Sancta Trinitas unus DEUS, | miserere: |
| JESU triginta argenteis appretiate, | miserere: |
| Jesu ad Discipulorum pedes inclinate, | miserere: |
| Jesu in oratione prostrate, | miserere: |
| Jesu in agonia sanguineo sudore perfuse, | |
| miserere nobis. | |
| Jesu osculo à Juda tradite; | miserere: |
| Jesu à ministris ligate, | miserere: |
| | Jesu |

| | |
|---|-----------------------|
| Jesu à Discipulis derelictè, | miserere. |
| Jesu Annæ & Caiphæ presentate, | miserere: |
| Jesu alapâ à ministro percussè, | miserere: |
| Jesu à falsis testibus accusatè, | miserere: |
| Jesu reus mortis judicatè, | miserere: |
| Jesu in faciem conspuatè, | miserere: |
| Jesu oculis velatè & colaphis casè, | miserere: |
| Jesu à Petro ter negatè, | miserere: |
| Jesu victus Pilato traditè, | miserere: |
| Jesu ab Herode & ejus exercitu illuse, | q̃ eto & miserere: |
| Jesu veste alba indutè, | miserere: |
| Jesu Barabbæ postpositè, | miserere: |
| Jesu flagellis casè, | miserere: |
| Jesu propter scelera nostra attritè, | miserere: |
| Jesu veste purpureâ indutè, | miserere: |
| Jesu spinis coronatè, | miserere: |
| Jesu arundine percussè, | miserere: |
| Jesu à Judæis ad crucem postulatè, | miserere: |
| Jesu morte turpissima condemnatè, | miserere: |
| Jesu crucis pondere gravatè, | miserere: |
| Jesu vestibus exutè, | miserere: |
| Jesu cum iniquis reputatè, | miserere: |
| Jesu à prætereuntibus blasphematè, | miserere: |
| Jesu à Judæis derisè, | miserere: |
| Jesu à latrone injuriis laceratè, | miserere: |
| Jesu opprobriis saturatè, | miserere: |
| Jesu felle & aceto in siti poratè, | miserere: |
| Jesu usque ad mortem crucis fagatè, | obediens fagatè, |

| | |
|---|-----------------|
| facte, | miserere nobis |
| Jesu lancea transfixe, | miserere. |
| Jesu, de cuius latere exivit sanguis & aqua, | miserere: |
| Jesu de cruce deposite, | miserere: |
| Jesu in monumento novo tumulate, | miserere: |
| Jesu cujus livore sanati sumus, | miserere: |
| Jesu pro nobis crucifixus, mortuus, & sepultus, | miserere nobis. |

Agnus DEI qui tollis peccata mundi,
Paxce nobis Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Exaudi nos Domine,

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis.

JESU Christe audi nos,

JESU Christe exaudi nos,

Kyrie eleison, Christe eleison, Kyrie eleison,
Pater noster, &c.

V. Et ne nos inducas in tentationem,

R. Sed libera nos à malo.

V. Domine exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat.

OREMUS

Consecramus te, Domine JESU Christe,
ut Passio tua sit virtus nostra, quâ muniamur, protegatur, & defendamur, pone
Passionem, crucem, & mortem tuam inter
judicium

judicium tuum, & animas nostras; ut inde mihi sit gratia & misericordia, (viviis venia, defunctis requies; pax Ecclesie, peccatoribus omnibus vita & gloria sempiterna. Qui viviis & regnas, &c:

ABsorbeat quæso dulcissime Domine JESU Christe, spes unica, & auxilium animæ meæ, mentem meam ab omnibus, quæ sub cælo sunt, ignita & melliflua vis amoris tui, moriar qui amore amoris mei dignatus es mori; & deduc me è terris in paradysum, qui de paradiso propter me in terras descendisti, ô amor amoris mei, Amen.

Litania de Angelis sanctis.

Krie e eilon, Christe eleison, Kyrie eleison, Christe audinos. Christe exaudinos.

Pater de coelis DEUS, Miserere nobis.

Fili Redemptor mundi DEUS, Miserere nobis.

Spiritus sancte DEUS, Miserere nobis.

Sancta Trinitas unus DEUS, Miserere nobis.

Sancta MARIA,

Sancta DEI Genitrix,

Sancta Virgo Virginum,

Sancte Michaël, qui populo DEI semper defensor fuisti,

Sancte Michaël, qui luciferum cum complicitibus rebellibus de cælo deturbasti,

Sancte

Oratio pro nobis.

Sancte Michâél, qui accusatorém fratrum
nostrorum in profundum Inferni de-
jecisti,

Sancte Gabriel, qui Joannis Baptistæ or-
tum & ministerium prænuntiasti,

Sancte Gabriel, qui Incarnationis Verbi
Divini, nuntius exististi,

Sancte Raphaél, qui Tobiam saluum du-
xisti & reduxisti,

Sancte Raphaél, qui demonium à Sara de-
pulisti,

Sancte Raphaél, qui Tobiam senio-
rem illuminasti,

Sancti Angeli, qui super solium DEI ex-
celsum & elevatum statis.

Qui Sanctus concinitis,

Qui discussis tenebris mentem nostram
illuminatis,

Qui Divina hominibus nuntiatis,

Qui hominum custodiam à DEO accepi-
stis,

Qui semper faciem Patris qui in cælis est,
videris,

Qui super uno peccatore poenitentiam a-
gente gaudetis,

Qui Sodomas acitate percussistis,

Qui Loth de medio peccatorum eduxistis,

Qui in monte Sina divinam Legem Moyse
tradidistis,

Qui

Orate pro nobis.

Orate pro nobis.

Litania

Qui Christo nato gaudium hominibus
annuntiastis,

Qui Christo in deserto ministrastis,

Qui Lazarum in Sinum Abrahamæ depor-
castis,

Qui juxta Christi sepulchrum in albis se-
distis,

Qui Christo in cœlum ascendente; ejus
discipulis apparuistis,

Qui Christum ad iudicium venturum
cum signo Crucis præcedetis,

Qui electos in fine sæculi congregaturi
estis,

Qui de Christi regno omnia scandala
colligetis,

Qui malos de medio iustorum separabi-
tis,

Qui orantium preces ad DEUM deferitis,

Qui morientibus assistitis,

Qui animas iustorum ab omni labe pur-
gatas ad cœlum deducitis,

Qui prodigia & miracula virtute DEI
perpetratis,

Qui hæreditatem salutis capientibus in
ministerium mittimini,

Qui Babylonem curatis, nolentem cu-
rari, migrando deseritis,

Qui super regna & provincias constituti
estis,

Qui ho-

Orate pro nobis,

Orate pro nobis,

Ad SS. Angelos

et

Qui hostium exercitus sæpè dissipâstis,
Qui DEI famulos ex carceribus & aliis

vitz periculis sæpè liberâstis,

Qui sanctis Martyribus in tormentis sæpè solatio fuistis,

Qui Ecclesiæ Prælatos & Principes eisdem nutritos, peculiari curâ fovere soletis,

Omnes Sancti beatorum Spirituum ordines.

A cunctis periculis per sanctos Angelos tuos, libera nos Domine,

Ab insidiis diaboli, libera nos Domine.

Ab omni hæresi & schismate, libera nos Domine.

A peste fame & bello, libera nos Domine.

A subitanea & improvisa morte, libera nos Domine.

A morte perpetua, libera nos Domine.

Peccatores,

Per sanctos Angelos tuos,

Ut nobis parcas,

Ut nobis indulgeas,

Ut Ecclesiam tuam sanctam regere & conservare digneris,

Ut Dominum Apostolicum, & omnes Ecclesiasticos ordines protegere digneris,

Ut Imperatori N, Regi N. & omnibus

Principibus Christianis, pacem & unitatem

Orate pro nobis,

Te rogamus audi nos,

tatem largiri digneris, Te rogamus audi nos

Ut fructus terræ dare & conservare digneris, Te rogamus audinos.

Ut omnibus fidelibus defunctis requiem æternam donare digneris, Te rogamus audinos.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Parce nobis JESU.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Exaudi nos JESU.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis JESU.

Kyrie eleison, Christe eleison,

Kyrie eleyson. Pater noster, &c.

V. Et ne nos inducas intimationem,

R. Sed libera nos à malo.

V. In conspectu Angelorum psallam tibi
DEUS meus,

R. Adorabo ad templum sanctum tuum, &
confitebor nomini tuo Domine.

V. Domine exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat.

OREMUS

DEUS, qui miro ordine Angelorum ministeria hominumque dispensas: concede propitius; ut à quibus, tibi ministrantibus, in cælo semper assistitur, ab his in terra
vita

vita nostra muniat. Per Dominum no-
strum, &c.

Litania pro fidelibus Defunctis.

Krie eleison. Christe eleis. Kyrie eleison
Christe audi nos. Christe exaudi nos.
Pater de cælis DEUS. Miserere nobis
Fili Redemptor mundi. DEUS Miserere
nobis.

Spiritus sancte DEUS, Miserere. nobis.

Sancta Trinitas unus DEUS. Miserere no-
bis.

Sancta MARIA, ora pro fidelibus defunctis.

Sancta DEI Genitrix, ora pro fidelibus defunctis.

Sancta Virgo Virginum, ora pro fidelibus
defunctis.

Sancte Michaël, ora pro fidelibus defunctis.

Omnes sancti Angeli & Archangeli, orate
pro fidelibus defunctis.

Sancte Johannes Baptista, ora pro fidelibus
defunctis.

Sancte Petre, ora pro fidelibus defunctis.

Sancte Paule, ora pro fidelibus defunctis.

Sancte Joannes, ora pro fidelibus defunctis.

Omnes sancti Apostoli & Evangelistæ, orate
pro fidelibus defunctis.

Sancte Stephane, ora pro fidelibus defunctis.

Sancte Laurenti, ora pro fidelibus defunctis.

Omnes sancti Martyres, orate pro fidelibus
defunctis.

Sancte Gregori, ora pro fidelibus defunctis.

Sancte Ambrosi, ora pro fidelibus defunctis.

Omnes sancti Pontifices & Confessores, orate pro fidelibus defunctis.

Sancta Maria Magdalena, ora pro fidelibus defunctis.

Sancta Catharina, ora pro fidelibus defunctis.

Omnes Sanctæ Virgines & Viduæ, orate pro fidelibus defunctis.

Omnes Sancti & Sanctæ DEI, intercedite pro fidelibus defunctis.

Propitius esto, parce eis Domine.

Propitius esto, exaudi eos Domine,

Ab ira tua,

A potestate diaboli,

A flamma ignis,

A regione umbræ mortis,

Per immaculatam Conceptionem tuam,

Per Nativitatem tuam,

Per dulcissimum nomen tuum,

Per multitudinem miserationum tuarum.

Per acerbissimam Passionem tuam,

Per sanctissima vulnera tua,

Per pretiosissimum sanguinem tuum,

Per ignominiosam mortem, quâ nostram moriendo destruxisti,

Peccatores, Te rogamus audi nos.

Qui Mariam absolvisti, & latronem exaudisti;

Qui

Libera eos Domine. Libera eos Domine.

Qui salvandos salvas gratis,
 Ut parentes, propinquos, & benefactores
 nostros, & omnes fideles defunctos a
 pœnis purgatorii liberare digneris,
 Ut Angelorum cœtus eis splendidus Sub-
 veniat,
 Ut eis Patriarcharum & Prophetarum
 cuneus occurrat.
 Ut omnium fidelium defunctorum, quo-
 rum specialis in terra memoria non
 habetur, misereri digneris,
 Ut eos gloriosus Apostolorum chorus
 suscipiat.
 Ut candidatorum Martyrum triumphans
 exercitus eorum latus circumdet,
 Ut eos sanctorum Confessorum ad cœlos
 agmen deducat.
 Ut jubilantium Virginum eos corona co-
 mitetur.
 Ut ad auctore suū, quē eos de limo terre
 formavit, redire valeant,
 Ut mitis atq; dulcis IESU, tuus eis aspe-
 ctus benignus appareat,
 Ut ad dexteram tuam in electorum con-
 sortium eos recipias,
 Fili DEI fons pietatis,
 Rex tremendæ Majestatis,
 Qui claves habes mortis & infēni,
 Agnus DEI, qui tollis peccata mundi, dona
 eis requiem, Ca Agnus

Terogamus audi nos.

Terogamus audi nos.

Pro Defunctis
Agnus DEI, qui tollis peccata mundi, dona
eis requiem.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi, dona
eis requiem sempiternam.

Christe audi nos, Christe exaudi nos.

Kyrie eleison Christe eleison. Kyrie eleison.
Pater noster, &c.

v. Et ne nos inducas in tentationem,

R. Sed libera nos à malo

v. Requiem æternam dona eis Domine,

R. Et lux perpetua luceat eis,

v. Domine exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus,

Fidelium DEUS omnium Conditor &
Redemptor, animabus famulorum fa-
mularumque tuarum, remissionem cuncto-
rum tribue peccatorum, ut Indulgentiam,
quam semper optaverunt, pijs supplica-
tionibus consequantur.

LITANIÆ,

*Afflictis, ægrotis, & moribundis accommoda-
ta, & sacris literis.*

Krie eleison, Christe eleison.
Kyrie eleison.

Christe audi nos, Christe exaudi nos.

Pater

Pater de coelis DEUS,
 Fili Redemptor mundi DEUS,
 Spiritus sancte DEUS,
 Sancta Trinitas unus DEUS,
 Qui sanas contritos corde,
 Qui vulneras & mederis,
 Qui mortificas & vivificas,
 Qui deducis ad inferos, & reducis,
 Qui orantes in sua infirmitate curare
 consuevisti,
 Qui propter misericordiam tuam magnā,
 salvos facies omnes sperantes in te,
 Qui Job ulcere pessimo percussū sanāsti,
 Qui Ezechiā ad te clamantem à mor-
 bo liberāsti,
 Qui dāmonem à Sara pepulisti,
 Qui Tobiam lumen cœli videre fecisti,
 Qui Chananiā pro filia deprecantem
 exaudisti,
 Qui socrum Petri à febrī liberāsti,
 Qui mulierem spiritu infirmitatis annis
 octodecim inclinatam ad sanitatem
 perfectam erexisti,
 Qui filium Principis jam mori incipien-
 tem à febrī salvāsti.
 Qui puerum Centurionis verbō sanāsti,
 Qui paralyticos & leprosos curasti & muni-
 dāsti,
 Qui à spiritibus immundis vexatos obse-

Miserere nobis.

cos liberasti,

Qui mulierem per tactum fimbriae tuae à
sanguinis fluxu sanasti,

Qui surdos audire fecisti,

Qui claudis gressum restituiſti,

Qui mutorum ora aperuiſti,

Qui cecos illuminasti,

Qui omnes infirmos & aegrotos tangen-
do sanasti,

Qui omnes oneratos & laborantes reficis,

Qui omnes languores nostros portasti,

Qui filium mortuum matri viduae vivum
reſtituiſti,

Qui filiam Archisynagogi ad vitam re-
vocasti,

Qui Lazarum quatrduanum à mortuis
reſcitiſti,

Qui aegrotos viſitasti, & viſitantibus
praemia aeterna promiſiſti,

Qui per umbram Petri multos ab infirmi-
tatibus liberasti,

Qui per sudaria & semicinctia Pauli mul-
tos infirmos curasti,

Qui per ossa Elifae mortuum ad vitam
revocasti,

DEUS adjutor & protector noster,

Susceptor & liberator noster,

Refugium nostrum & cornu salutis nostrae,

Fortitudo & patientia nostra, miserere nobis

Salva

Miserere nobis.

Saluator & Redemptor noster, miserere nobis:

Propitius esto, parce nobis Domine,

Propitius esto, exaudi nos Domine.

Ab omni malo,

Ab omni peccato.

Ab omni morbo & languore.

Ab omni impatientia & pusillanimitate,

A peste & omni contagione,

Ab insidiis diaboli,

A periculis mortis,

A doloribus inferni,

A subitanea & improvisa morte,

A damnatione perpetua,

Per tentationem tuam,

Per lachrymas & arumnas tuas,

Per labores & defatigationes tuas,

Per tristitiam & tadium tuum,

Per pavorem & moerorem tuum,

Per sitim & famem tuam,

Per agoniam & sanguinem tuum,

Per sacrosancta vulnera tua,

Per pretiosum sanguinem tuum

Per crucem & passionem tuam,

Per mortem & sepulturam tuam,

Per gloriosam Resurrectionem tuam,

Per admirabilem Ascensionem tuam,

In die Judicii,

Peccatores, Te rogamus audi nos.

Ut nobis parcas, Te rogamus audi nos.

Libera nos Domine

- Ut nobis indulgeas,
 Ut spatium veræ pœnitentiæ nobis concedas,
 Ut compunctionem cordis & fontem lacrymarum nobis dones,
 Ut nos visitare & consolari digneris,
 Ut sanitatem mentis & corporis largiaris
 Ut indulgentiam omnium peccatorum impertias,
 Ut nobis gratiam & consolationem sancti Spiritû inundas.
 Ut veram ac Christianam patientiam tribuas,
 Ut nobis in omni tribulatione nostra succurras,
 Ut nos in hora mortis contra omnes insidias diaboli protegas,
 Ut nos in tua gratia mori, & ad finem usque perseverare facias,
 Ut extrema nostra benedicas & sanctifices,
 Ut spiritum nostrum in manus tuas suscipias,
 Ut post obitum nostrum Paradisi januas nos gaudenter introire iubeas,
 Ut nos exaudire digneris,
 Fili DEI.
 Agnus DEI, qui tollis peccata mundi, parce nobis Domine,
 Agnus DEI, qui tollis peccata mundi, exaudi

di nos Domine.

Agnus Dei, qui tollis peccata mundi, misere-
ferere nobis.

Christe audi nos, Christe exaudi nos.

Kyrie eleison. Christe eleison.

Kyrie eleison.

Pater noster, &c.

V. Et ne nos inducas in tentationem.

R. Sed libera nos a malo.

V. Salvos fac servos tuos.

R. DEUS meus sperantes in te.

V. Adjutor noster esto ne dereliquas nos.

R. Neque despicias nos DEUS salutaris noster.

V. Adjuva nos DEUS auxiliator noster.

R. Et propter gloriam nominis tui libera
nos.

V. Domine exaudi orationem meam.

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus.

Misericordiam tuam humiliter deprecamur omnipotens DEUS: quæ amissam gratiam nobis reconciliet atque munus patientiæ in illatis omnibus semper & ubique protegendo impertiat.

DEUS sub cuius nutibus vitæ nostræ momenta, decurrunt, suscipe preces humiliter ad te clamantium, ut de omni adversitate & aegritudine liberati, perpetuam te gratiarum actione laudemus. Per Dominum nostrum, &c.

Cy

LITA

LITANIÆ De S. IOANNE NEPOMUCENO

*Ad S. Vitum Pragæ Canonico, in causa
inviolatè servatæ Sacrosanctæ Confessionis Si-
gilli Martyre & singulari fama periclitanti.*

P A T R O N O

Cujus memoria 16 Majj colitur,

K Kyrie eleyson, Christe eleyson
Kyrie eleyson.

Christe audi nos,

Christe exaudi nos

Pater de cœlis DEUS, Miserere nobis.

Fili Redemptor mundi DEUS Miserere nobis

Spiritus Sancte DEUS, Miserere nobis

S. Trinitas unus DEUS, Miserere nobis,

S. Maria, Ora pro nobis

S. DEI Genitrix

S. Virgo Virginum,

S. Joannes Nepomucene,

Lachrymis, & precibus senum tuorum

Parentum ad B. V. M. fufis, nate.

Visibili corusca luce in natali tuo à

Cœlo honore.

Vnigenite solarium, & Gaudium tuorum

Parentum

Impiger minister S. Altaris, Vir Aposto-

Ora pro nobis,

Ioanne ° Nepom:

40

lice,

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

Lumen Ecclesiæ Pragensis,
Speculum & Norma Confessoriorum.
Eleemosynarie liberalissime,
Refugium pauperum,
Consolator afflictorum,
Expugnator hæresum,
Tuba legis Evangelicæ
Dignitatum & honorum Contemptor.
Ateneris ungviculis ardētissime Mariophile
Orator eloquentissime,
Predicator zelotissime,
Salutis animarum cupidissime
Multos ad penitentiam convertēs.
Sanctimonix prototypum,
Vas Puritatis mundissimum,
Rosa Patientiæ,
Spiritu prophetico imbutus,
Sigilli confessionis Sacramentalis Custos
invictissime,
Ad frangendum hoc Sacrum Sigillum frustra
blandiis. & minis sollicitate.
Ante & post torturam confessionem Augustæ
propalare reculans,
Eligens potius mori, quam minima confes-
sionis secreta prodere,
In tormentis perferendis patientissime &
constatissime
Ad mortem te Sancte semper disponens.

Ora pro nobis.

Illatas tibi injurias parienter ferens.

Martyrii cupidissime

Ob sigillum S. Confessionis integre servatum in Moldavam flumen Præcipitate

Martyr Desinelyte,

Post mortem luminibus noctu supra aquam juxta corpus tuum coruscantibus à Deo manifestate.

Cujus Sepulchrum miraculis Gloriosum

Bohemorum Thaumaturge & Patron.

Nobile depositum Verbis Pragens.

Patrone singularis famâ periclitantium,

Agnus Dei qui tollis peccata mundi Parce nobis Domine.

Agnus Dei qui tollis peccata mundi, Euaudia nos Domine.

Agnus Dei qui tollis peccata mundi miserere nobis

Christe audi nos,

Christe exaudi nos,

Pater noster &c. Ave Maria. &c.

Ora pro nobis B. Ioannes Nepomucene

Ut digni efficiamur promissionibus Christi,

O R E M U S

Adesto Domine precibus nostris, quas in memoriam Beati Ioannis Confessoris fundimus ut eius intercessionem, & meritis ab inania, & temporali derisu liberati, ante obitum confelli, & penitentes ad æter-

Devotio ad S.

42

ad beatitudinis portum venire mereamur
Per Christum Dominum nostrum, Amen,

D E V O T I O

Ad S A N C T V M

D I S M A M

*Pœnitentem Latronem Ma-
gnum Agonizantium Patronũ*

NEc minùs mirabilis in S. Disma Latro-
ne fuit Deus, quem post scelèra ad eum
Sanctitatis gradum sublimavit, ut è latrone
& Confessor, & Defensor Christi, & Martyr,
juxta S. Augustinum, Propheta, juxta S.
Chrysostomum, Evangelista, juxta S. Atha-
nassium, & juxta S. Ambrosium primitiæ
Crucis Christi effectus. primus Paradisi ja-
nuas ingredi promeruerit, Cui id specialiter
à Deo concessum videtur, ut seriz pœni-
tentiz, & gratiæ finalis impetrandæ patro-
num agat. Quantum proinde tibi bona
mors est in vobis tantundem sit devotio
erga

erga magnum hunc Sanctum commendata;
 Cōplures pro felici morte per eū obtinen-
 da- anniverſarium eius comemorationis 25
 Martij ferventius recolunt; alij eum ſin-
 gulis VI. ferijs, quā hic converſus feliciter
 obiit, venerantur. Quare Sanctum ut ames,
 venereris, & longum æternitatis iter ingreſ-
 ſurus, viz comitem eligas, hortor: Hic re-
 ducet optime, qui primus ad cœlum viam
 invenit, Hunc ſi ſequeris, rectā ad paradi-
 ſum pervenies; quod tibi, mihiq̃e unice
 opto.

Antiph. Beati mortui, qui in Domino
 moriuntur. A modo jam dicit Spiritus, ut
 requieſcant a laboribus ſuis. Apoc 14 O-
 DISMA Larro pœnitens.

Lectiſſime Patrone,

Sis mihi Tutor moriens

Lum Luctor in agone.

O R A T I O

SANCTE DISMA, qui mirā Dei providen-
 tiā ex nefario Latrone in eximium pœni-
 tentiæ ſpeculum evaſiſti, & paucas intra ho-
 ras æterna tibi gaudia comparāſti aſpice de
 ſublimi gl̃rie tue throno in hanc vallem
 miſeriæ, recordare ō Sancte mirabilis, men-
 sis humanæ fragilitatis, ad malum ſemper,
 quam ad bonum, magis proclivis. recorda-
 re,

re, & pro nobis ad Deum appella, ut sicut
per gratiam suam efficacem adpœnitentiam
& paradisi cœlestis gloriam te perduxit,
itâ nos famulos tuos, & famulas, eâdem
efficaci gratiâ ad dignos pœnitentiæ fructus
impellat, ut peccata tecum abolentes, pie
tibi commoriamur, ac unâ tandem in Deo
salutari nostro perenniter exultemus A.

LITANIÆ

De mirabili S. Penitente Latrone

DISMA

Krie eleyson. Christe eleyson, Kyrie
eleyson, Christe audi nos, Christe exau-
di nos.

Pater de Cœlis Deus, miserere nobis.

Fili Redemptor mundi Deus, miserer nobis

Spiritus Sancte Deus miserere nobis

S. Trinitas unus Deus, miserere nobis.

S. Maria, Refugiū peccatorum Ora pro nobis

S. Disma Latro pœnitens, Ora pro nobis,

S. Disma Probe Christi Discipule Ora pro

S. Disma, quem Christus horâ sextâ conversa-
tit, Ora pro nobis

S. Disma qui mediâ horâ ex nequam per-
fectissimus evasisti Ora pro nobis

S. Disma, Martyr & Collega Christi Martyrij,

S.

- S. Disma in sanguine tuo baptizate,
 S. Disma testis innocentie Christi, Ora pro nobis.
- S. Disma; Camille & Minister Christi in Sacrificio, Ora pro nobis.
- S. Disma Primitie Crucis Christi atque credentium, Ora pro nobis.
- S. Disma, ut Latio crucifixe & repente Evangelista facere, Ora pro nobis.
- S. Disma, ex Latione Propheta, & ex cruce Prædicator, Ora pro nobis.
- S. Disma, coram magna multitudine hominum Christum Messiam ex Crucis suggestu prædicans, Ora pro nobis.
- S. Disma, coniator illustris, Ora pro nobis.
- S. Disma, qui Christum, quem Petrus negavit, Confessus es, Ora pro nobis.
- S. Disma, cui precibus suis Beatissima Dei Genitrix Maria conversionem impetravit, Ora pro nobis.
- S. Disma, latroni blasphemanti silentium imponens, Ora pro nobis.
- S. Disma, qui in cruce confessus es peccata tua, Ora pro nobis.
- S. Disma, qui plenariam indulgentiam, quoad poenam, & culpam, a Christo consecutus es, Ora pro nobis.
- S. Disma, cui Christus ipse in Cruce Paracelum promissus, Ora pro nobis.
- S. Di,

- S. Disma, qui præcipuas virtutes, Fidem,
spem, charitatem, in Cruce acceptas,
conservasti, Ora pro nobis
- S. Disma, magna aquila per ærem volans
in paraditum, Ora pro nobis
- S. Disma, cui voluntas bona in Cruce
profuit, Ora pro nobis.
- S. Disma, qui prior, quàm Apostoli ad
paraditum pervenisti, Ora pro nobis.
- S. Disma, Archangele Paradisi Ora:
- S. Disma, primogenite Filii Christi Cru-
cifixi, Ora pro nobis.
- Vt veram nobis contritionem; dignamque
peccatorum satisfactionem à Deo impe-
trare digneris, Terogamus audi nos.
- Vt gratiam nobis, nexum in confessione
pudorem abijciendi obtinere digneris,
Terogamus audi nos.
- Vt meritis tuis à lethalibus nos Deus no-
xis præservare & veniales clementes in-
dulgere digneris, Te rogamus audi nos
- Vt gratiam nobis in vera Catholica fide
vivendi ac moriendi obtinere digneris,
Terogamus audi nos.
- Vt hostes internas in pusillanimitatem,
vel desperationem nos deturbare non
prævaleant, Te rogamus audi nos.
- Vt firmam nobis à Deo spem & filialem
in merita Christi fiduciam impetrare
digne

digneris

Terogamus audi nos.

Vt Dei roborati gratia, omnē erga proximum rancorem, odium, ac inimicitiam deponere valeamus. Terogamus audi.

Vt mentes nostræ a te intercedente Igne Divini amoris accendantur. Terogamus

Vt omnes languores, & dolores, à benigna Dei manu humiliter acceptare, & patienter perferre possimus. Teroga:

Vt venerandis Ecclesiæ Sacramentis, Sacramenti Eucharistiæ & extremæ Unctionis ante obitum muniri mereamur, Terogamus

Vt nobis gratiam in agone mortis SS. Jesu & Mariæ Nomina ore vel corde saltem devotē invocandi exorare digneris, Terogamus audi nos.

Vt animas nostras, à corpore seperatas in tutelam tuam suscipere, & earum coram districto Iudice, causas agere digneris. Te rogamus audi nos.

Venerande Anima Sancte mirabilis, Te rogamus
Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Parce nobis Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Exaudi nos Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis.

Antiph. Beati mortui qui in Domino moriuntur. A modo jam dicit Spiritus ut requiescant

quiescant à laboribus suis. c. Apocal: 4.

S. Dilma memor sis omnium.

Cum morte conflictantium.

O R A T I O ut supra 42.

Alia oratio S. Brigittæ ex Revelatione.

Benedictio æterna sit tibi, Domine mi
IESU Christe, qui existens in mortis
agonia, omnibus peccatoribus spem de ve-
nia tribuisti, quando latroni ad te con-
verso paradisi gloriam misericorditer pro-
misti,

LITANIÆ

AD

S. Patrem nostrum

IGNATIUM

Soc: IESU Fundatorem.

Krie eleison. Christe eleison.

Kyrie eleyson.

Christe audi nos, Christe exaudi nos.

Pater de coelis DEUS, Misereere nobis

Fili Redemptor mundi DEUS, Misereere

Spiri-

| | |
|------------------------------------|----------------|
| Spiritus S. DEUS, | Miscere nobis |
| S. Trinitas unus DEUS, | Miscere nobis |
| Sancta MARIA, | Ora pro nobis. |
| Sancta DEI Genitrix, | Ora: |
| Sancta Virgo Virginum, | Ora: |
| Sancte Pater Ignati, | Ora: |
| Ignis à DEO orbis illate, | Ora: |
| Fundator Societatis JESU, | Ora: |
| Cultor admirande SS. Trinitatis, | Ora: |
| JESU & MARIE delictum, | Ora: |
| Annule digiti Dei. | Ora: |
| Sectator Apostolorum, | Ora: |
| Æmulator Martyrum, | Ora: |
| Cognitor celestium arcanorum, | Ora: |
| Zelator animarum, | Ora: |
| Vas electionis portans nomen JESU, | Ora: |
| Lumen totius orbis, | Ora: |
| Exemplar perfectionis, | Ora: |
| Extirpator vitiorum, | Ora: |
| Gazophacium virtutum, | Ora: |
| Contemptor mundi & vanitatum ejus, | Ora: |
| Decus vite mixte, | Ora: |
| Zelotes majoris DEI glorie, | Ora: |
| Lucerna charitatis, | Ora: |
| Abyssus humilitatis, | Ora: |
| Lilium castitatis, | Ora: |
| Prodigium obedientie, | Ora: |
| Norma patientie, | Ora: |
| Idea mortificationis, | Ora: |

Refur

Litania

49

| | |
|--------------------------------------|------|
| Regula devotionis, | Ora: |
| Imago abſtinentiæ, | Ora: |
| Sidus conſtantiæ: | Ora: |
| Speculum modeſtiæ, | Ora: |
| Conciliator diſſidentium, | Ora: |
| Magiſter ignorantium, | Ora: |
| Reſtaurator pietatis, | Ora: |
| Pacis & ſanctimoniæ templum, | Ora: |
| Conviva mentiæ Chriſti, | Ora: |
| Sacrarium ſanctiſſimæ Eucharistiæ, | Ora: |
| Antelignane militiæ IEſu, | Ora: |
| Everſor idolorum, | Ora: |
| Dux pœnitentium, | Ora: |
| Pharos naufragantium peccatorum, | Ora: |
| Piſcator infidelium, | Ora: |
| Venator ferarum mentium, | Ora: |
| Diſcretor ſpirituum, | Ora: |
| Amator crucis Chriſti, | Ora: |
| Ocelle Religioſorum, | Ora: |
| Sanitas infirmorum, | Ora: |
| Solatrium afflictorum, | Ora: |
| Aſylum pauperum, | Ora: |
| Nutritie Orphanorum, | Ora: |
| Doctor parvulorum, | Ora: |
| Pater ſtudioſæ Juventutis, | Ora: |
| Novum militantis Eccleſiæ ſubſidium, | Ora: |
| Popugnaculum fidei Catholicæ, | Ora: |
| Atlas Eccleſiæ DEI, | Ora: |
| Refugium Parturientium, | Ora: |

Terror

Terror Dæmonum, Ora pro nobis.

Patrone te colentium, Ora pro nobis.

Sancte Pater Ignati! Ora pro nobis.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi.

Parce nobis Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,

Exaudi nos Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,

Miserere nobis.

Kyrie eleison, Christe eleison. Kirie eleisō.

Pater noster, &c.

Vers. Et ne nos inducas in tentationem.

Resp. Sed libera nos à malo.

Vers. Ora pro nobis S. Pater Ignati,

Resp. Ut digni efficiamur promissionibus
Christi.

Oremus.

DEUS, qui ad maiorem tui nominis glo-
riam propagandam, novò per B. Ignatium subsidio militantem Ecclesiam robo-
rasti: concede, ut ejus auxilio & imitati-
one certantes in terris, coronari cum ipso
mereamur in cælis. Qui vivis & regnas
cum DEO Patre in unitate Spiritus sancti
DEUS, per omnia secula seculorum,

Amen.

Ora-

Oratio, quæ se DEO quotidie offerrebat
S. IGNATIUS.

Suscipe Domine universam meam libertatem, accipe memoriam, intellectum, & voluntatem: quidquid habeo vel possideo, mihi largitus es, id tibi totum restituo, ac tua prorsus voluntati trado gubernandum: Amorem tui solum cum gratia sua mihi dones, & dives sum satis, nec aliud quidquam ultra posco. Amen.

LITANIÆ

Ad

S. FRANCISCUM XAVERIUM:

Quas Illustrissimus Dominus D. F. Casparus, de Villaroel, Episcopus S. Jacobi Chilensis, & Regia Hispaniarum Maj. stat. à Consiliis, in honorem Sancti (quod ejus patrocinio inter ruinas ex terra motu jam sepultus, salvus evaserit) gratitudinis ergo consuecinnabit ipse, & statis ex voto diebus rectabit, de inde in publicum aliorum bonum typis ebulgabit.

Krie eleison. Christe eleison:
 Kyrie eleison.

Christe audi nos Christe exaudi nos

Pater de coelis DEUS. Miserere nobis.

Fui

Fili Redemptor mundi DEUS Misere
nobis.

Spiritus sancte DEUS, Misere nobis,
Sancta Trinitas unus DEUS, Milerere:

Sancta MARIA,

Sancta DEI Genitrix,

Sancta Virgo Virginum,

Sancte Pater Ignati,

Sancte Francisce Xaveri, dignissime &

Dilectissime Fili S. P. Ignati,

S. Francisce Xaveri evangelizans pacem,

S. Francisce Xaveri evangelizans bona,

Vas electionis portas nomen JESU co-
ram gentibus,

Vas redundans Divinae Charitatis,

Firmamentum orientis Ecclesiae,

Propugnator Fidei,

Impugnator infidelitatis,

Prædicator Evangelicæ veritatis,

Idolorum destructor,

Electum à Patre æterno instrumentum
propagandæ divinæ gloriæ,

Fidelis imitator & socie JESU Christi,
Fili DEI.

Tuba resonans S. Spiritus,

Columna templi DEI,

Lux Paganorum,

Magister Credentium,

Speculum veræ pietatis,

Dux

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

Dux in via virtutum & Christianæ per-
fectionis,
Exemplar Apostolici Spiritus, & sancti-
tatis,
Lumen cæcorum,
Pes claudorum,
Auxiliator naufragantium,
Salus ægrotorum,
Fugator demonum,
Suscitator mortuorum,
Cujus potestati obedunt mare & tem-
pestates
Cujus imperia venerantur uniuersa ele-
menta,
Prodigiorum Thaumaturge,
Refugium miserorum,
Gaudium afflictorum,
Orientis Splendor
Instrumentum resurrectionis ad vitam
gratiæ & gloriæ,
Tabernaculum incorruptionis,
Ætærium divini amoris,
Gloria Societatis JESU,
Legate Apostolice Romanæ Sedis,
Pauperrime Xaveri,
Castissime Xaveri,
Obedientissime Xaveri,
Humillime Xaveri,

Ora pro nobis.

Ora pro nobis.

D

Crucis

Crucis Christi ac laborum pro Christo
cupidissime Xaveri,

In salutem proximi vigilantissime Xa-
veri,

Suavissime Xaveri,

Gloriosissime Xaveri,

Animarum, & Divini honoris zelator
ardentissime,

Angele moribus & vitâ,

Patriarcha affectu & studiô curandi
populum DEI,

Propheta dono & spiritu,

Apostole dignitate & meritô,

Doctor gentium potens in multifario
sermone & opere,

Confessor virtute & vitæ professione,

Virgo animô & corpore,

In quo Sanctorum omnium merita ex

Divina benignitate veneramus,

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
parce nobis Domine,

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
exaudi nos Domine,

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
miserere nobis.

Christe audi nos Christe exaudi nos.

Kyrie eleison. Christe eleison.

Kyrie eleison. Pater noster, &c.

v. Ora

Ora pro nobis.
Ora pro nobis.

Fili, qui omnibus, providisti in Redemptione. miserere nobis.

Spiritus Sancte; qui omnibus providisti in Tui Missionem, Miserere nobis,

Sancta Trinitas, à qua, per quam & in qua sunt omnia: miserere nobis,

Ad Romanos: II.

DEUS, qui tua Providentia quinque millia Virorum, quinque panibus, & duobus piscibus satiasti, *Matt: 14: 17.*

DEUS qui tua Providentiâ quatuor millia septem panibus, & paucis pisciculis replevisti, *Mat. 8.* miserere nobis.

Qui in Cana Galilææ tua Providentiâ aquam in vinum mutasti, miserere nobis.

Qui Petrum carceri inclusum Tua Providentiâ manibus Herodis per Angelum eripuisti *Act: 12.* miserere nobis.

Qui Noë tuâ Providentiâ à communi diluvio præservasti, *Gen: 8.* miserere nobis.

Qui Leth tuâ Providentiâ de Gomorreis, & Sodomitico igne eduxisti, *Gen 9.* miserere nobis.

Qui ad vocem Israhælis sibi emorientis oculos Agar aperuisti, & tua Providentiâ

tiā per Angelum ei aquām indig-
tāsti, *Gen. 12.* miserere. Nobis.

Qui Joseph à Fratribus venditum, tuā
providentiā in Ægypto exaltāsti, &
per eum toti Ægypto panem providisti,
Gen. 45.

Qui Moyten in Fiscella scirpea occlusum,
& aquis impositum, tuā Providentiā
conservāsti. *Exod. 2.*

Qui Israël à Pharaone fugienti aquas
maris tuā Providentiā exsiccasti, &
Equitarum ejus cum curribus sub-
mersisti, *Exod. 14.*

Qui Israëlitis in Marath amaritudi-
nem aquarum tuā Providentiā in
dulcorem vertisti, *Exod. 15.*

Qui Israëlitis tuā Providentiā cotur-
nices pluisti, *Exod. 16.*

Qui Israëlitis in Raphidim tuā Provi-
dentiā aquas de petra eduxisti:
Exod. 17.

Qui Samsoni siti enecto è dente molari
in maxilla asini aquas tuā Provi-
dentiā profilire fecisti, *Jud. 5.*

Qui Saul, patris asinas quarentem
tuā Providentiā ad Samuelē per-
duxisti, & in Regem ab eo ungi
voluisti, *1. Reg. 9.*

D3

Qui per

Miserere nobis, Miserere nobis.

Qui per inermem David tuâ Providentiâ de grâdi Goliath triûphâtē opprobrium ex Israel abstulisti, *Ibid: 17.*

Qui Eliam in torrente Carith tuâ Providentiâ per corvos pavisti, *3. Reg: 17.*

Qui per mulierem Sarephranam, Eliam tuâ Providentiâ sinè diminutione farinæ, & olei satiasti *Ibid: eodem.*

Qui Eliæ per Angelum tuâ Providentiâ panem subcinericium misisti,

Qui per Eliseum viginti panibus centum viros, ita ut adhuc panis superfuisset, tuâ Providentiâ satiasti, *Ih. 4.*

Qui per Raphâëlem juniori Tobie tuâ Providentiâ comitatum dedisti, & patri ejus, exenterati piscis felle visum restituiſti, *Tob 5.*

Qui Ananiam Misâëlem, & Azariam in medio ignis illatos Tuâ Providentiâ conservasti *Dan: 3.*

Qui Daniele in lacu leonum per Abacuc, tuâ Providentiâ ab Angelo ed apportatum pavisti, *Ibid: 24.*

Qui Daniele in lacu leonum à moribus tuâ Providentiâ intactum præservasti, *Dan: 6.*

Qui innocentiam Susannæ per Daniele tuâ

Miserere nobis,

Miserere nobis.

Miserere nobis,

quâ Providentiâ detexisti, *Dan. 2.*

Qui Jonam de ventre ceti post triduum
tuâ Providentiâ eduxisti, *Iona 2.*

Deus, à cuius Providentiâ omnia
expectant, ut des illis escam in
tempore, *Psal. 103.*

Deus in cuius Providentia est bonum
confidere, quàm confidere in homi
ne, *Psal. 117.*

Deus, in cuius Providentia est bonum
sperare, quàm sperare in Principibus;
Ibid:

Deus, cuius Providentia dat escam
omni carni, *Psal. 135.*

Deus in cuius Providentiam oculi
omnium sperant, & dat escam
illorum in tempore opportuno,
Psal. 144.

Deus, qui Tus Providentiæ manum
aperis, & implet omne animal be
nedictione, *Ibid: eod.*

Deus, qui tuâ Providentiâ advenam,
pupillum, & viduam suscipis *Psal. 145*

Deus cuius Providentia dat jumentis
escam ipsorum, & pullis corvorum
invocantibus eam. *Psal. 146.*

Deus apud cuius Providentiam nec
unus passeris est oblivio, *Luc. 12.*

Deus, cuius Providentia omnes capris
nostri capillos nume avit, *Ibid.*

Deus, qui Tua Providentia pascis vola-
tilia coeli, *Matth. 6.*

Deus, cuius Providentia vestit lilia agri?

Providus nobis esto, Parce nobis Do.

Providus nobis esto, Exaudi nos Domine

Ab oblivione beneficiorum tuorum

Libera nos Domine,

A nimia cura & sollicitudine, libera

A propria nostra voluntate. Liber nos

Ab inordinata in adversis tristitia &c.

Per admirabilem in Incarnato Tuo Filio,

factam mundo Providentiam &c.

Libera nos Domine

Per Providentissimam panis Eucharistici

in universo orbe multiplicationem,

&c. Libera nos Domine,

Peccatores, Te rogamus audi nos.

Nè peccare faciamus os nostrum neque

unquam opere dicamus coram Angelo;

non est Providentia *Ecclesiastici*: Te rogamus

audi nos.

Ut nos in te curam nostram jactare

concedas, & ipse nos enutrias. *Psal. 54.*

Ut nos primum quacere Regnum tuum

& iustitiam concedis, & cetera ex

tua Providentia nobis adicias, *Matth.*

6, Te

6. Te rogamus audi nos.

Ut pontificem nostrum N. Antistitem
N. & Imperatorem N. Tuâ Provi-
dentiâ regere, & conservare digneris,
Te rogamus audi nos

Ut Cultores Tuæ Providentiæ multiplica-
re digneris. Te rogamus audi nos.

Ut nos omnes sub tuam Sanctam &
specialem Providentiam suscipere di-
gneris, Te rogamus audi nos.

Pater cujus Providentia omnia gubernat,
Sapientia 12. Te rogamus audi nos

Agnus DEI qui tollis peccata Mundi,
Parce nobis Domine.

Agnus DEI qui tollis peccata Mundi,
Exaudi nos Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata Mundi,
Miserere nobis Domine.

V. Custodi nos Domine ut pupillam
oculi.

R. Sub umbra alarum tuarum protege nos

DEUS, cujus Providentia in sui dispo-
sitione non fallitur; te supplices
exoramus, ut noxia cuncta subtrahas
& omnia nobis profutura concedas, Per
D. nostrum. Amen.

LITANIAE

De omnibus Sanctis

Krie eleison. Christe eleison.
Kyrie eleison.

Christe audi nos. Christe exaudi nos.
Pater de coelis DEUS, Miserere nobis.
Fili Redemptor mundi DEUS, Miserere:
Spiritus S: DEUS, Miserere nobis.
Sancta Trinitas unus DEUS Miserere nos
Sancta MARIA, Ora pro nobis.
Sancta DEI Genitrix, Ora pro nobis
Sancta Virgo Virginum, Ora:
Sancte Michâél, Ora:
Sancte Gabriel, Ora:
Sancte Raphaél, Ora:
Omnes Sancti Angeli & Archangeli Ora-
te pro nobis.

Omnes Sancti beatorum Spirituum ordines
Orate pro nobis.

Sancte Joannes Baptista. Ora:

Omnes Sancti Patriarchæ & Prophetæ,
Orate pro nobis:

Sancte Petre, Ora:

Sancte Paule, Ora:

Sancte Andrea, Ora:

Sancte

De Omnibus Sanctis

63

| | |
|---------------------------------------|--------|
| Sancte Jacobe, | Ora: |
| Sancte Joannes, | Ora: |
| Sancte Thoma, | Ora: |
| Sancte Jacobe, | Ora: |
| Sancte Philippe, | Ora: |
| Sancte Bartholomae, | Ora: |
| Sancte Marthae, | Ora: |
| Sancte Simon, | Ora: |
| Sancte Thadze, | Ora: |
| Sancte Mathia, | Ora: |
| Sancte Barnaba, | Ora: |
| Sancte Luca, | Ora: |
| Sancte Marce, | Ora: |
| Omnes sancti Apostoli & Evangelistae, | |
| Orate pro nobis. | |
| Omnes sancti Discipuli Domini, | Orate: |
| Omnes sancti Innocentes, | Orate: |
| Sancte Stephane, | Ora: |
| Sancte Laurenti, | Ora: |
| Sancte Vincenti, | Ora: |
| Sancti Fabiane & Sebastianae, | Orate: |
| Sancti Cosma & Damianae, | Orate: |
| Sancti Gervasi & Protasi, | Orate: |
| Omnes sancti Martyres, | Orate: |
| Sancte Silvester, | Ora: |
| Sancte Gregori, | Ora: |
| Sancte Ambrosi, | Ora: |
| Sancte Hieronymae, | Ora: |

De

San-

Sancte Martine, Ora:

Sancte Nicolae, Ora:

Omnes Sancti Pontifices & Confessores,

Orate pro nobis

Omnes Sancti Doctores, Orate pro nobis

Sancte Antoni, Ora:

Sancte Benedicte, Ora:

Sancte Bernarde, Ora:

Sancte Dominice, Ora:

Sancte Francisce, Ora:

Omnes Sancti Sacerdotes & Levite, Orate

Omnes Sancti Monachi & Eremitae, Orate

Sancta Maria Magdalena, Ora:

Sancta Agatha, Ora:

Sancta Lucia, Ora:

Sancta Agnes, Ora:

Sancta Cecilia, Ora:

Sancta Catharina, Ora:

Sancta Anastasia, Ora:

Omnes sanctae Virgines & Viduae, Orate

Omnes Sancti & Sanctae DEI, Intercedite
pro nobis.

Propitius esto, Parce nobis Domine.

Propitius esto, Exaudi nos Domine.

Ab omni malo, Libera nos Domine.

Ab omni peccato, Libera nos Domine.

Ab ira tua, Libera nos Domine.

A subitanea & improvisa morte, Libera
nos Domine. Ab

Ab infidiis diaboli, Libera nos Domine.

Ab ira, & odio, & omni mala voluntate,
Libera nos Domine.

A spiritu fornicationis, Libera:

A fulgure & tempestate, Libera:

A morte perpetua, Libera:

Per mysterium S. incarnationis tuæ Libera.

Per Adventum tuum, Libera:

Per Nativitatem tuam, Libera:

Per Baptismum & sanctum jejunium tuum
Libera nos Domine.

Per crucem & passionem tuam, Libera:

Per mortem & sepulturam tuam, Libera:

Per sanctam resurrectionem tuam, Libera:

Per admirabilem ascensionem tuam, Libera:

Per adventum Spiritus sancti Paracleti,

Libera nos Domine.

In die iudicii, Libera nos Domine.

Peccatores, Te rogamus audi nos,

Ut nobis parcas,

Ut nobis indulgeas

Ut ad veram penitentiam nos perdu-
cere digneris,

Ut Ecclesiam tuam sanctam regere &
conservare digneris,

Ut domnū Apostolicum & omnes Ec-
clesiasticos ordines in sancta religi-
one conservare digneris,

Ut

Te rogamus audi nos.

Ut inimicos sanctæ Ecclesiæ humiliare digneris,

Ut Regibus & Principibus Christianis pacem & veram concordiam donare digneris.

Ut cuncto populo Christiano pacem & unitatem largiri digneris,

Ut nosmetipsos in tuo sancto servitio confortare & conservare digneris,

Ut mentes nostras ad cœlestia desideria erigas,

Ut omnibus benefactoribus nostris semper eterna bona retribuas,

Ut animas nostras, fratrum propinquorum, & benefactorum nostrorum ab æterna damnatione eripias,

Ut fructus terræ dare & conservare digneris,

Ut omnibus fidelibus defunctis requiem æternam donare digneris.

Ut nos exaudire digneris,

Fili DEI,

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Parce nobis Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,
Exaudi nos Domine.

Agnus Dei qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis.

Christe

Te rogamus audi nos.

Te rogamus audi nos.

Christe audi nos Christe exaudi nos.

Kyrie eleison. Christe eleison.

Kyrie eleison.

Pater noster &c. *secretò.*

Ver: Et ne nos inducas in tentationem,

Res: Sed libera nos à malo.

PSALMUS 69.

DEUS in adiutorium meum intende:
Domine ad adjuvandum me festina.

Confundatur & revereantur, qui quaerunt animam meam.

Avertantur retrorsum & erubescant,
qui volunt mihi mala.

Avertantur statim erubescentes: qui dicunt mihi euge euge.

Exultent & lætentur in te omnes, qui quaerunt te: & dicant semper; magnificetur Dominus, qui diligunt salutare tuum.

Ego verò egenus & pauper sum, DEUS adjuva me

Adjutor meus, & liberator meus es tu:
Domine ne moreris. Gloria Patri, &c.

Ver: Salvos fac servos tuos. *Res:* DEUS

meus sperantes in te. *Ver:* Esto nobis domine

turris fortitudinis. *Res:* A facie inimici.

Ver: Nihil proficiat inimicus in nobis. *Res:* Et filius iniquitatis non appo-

nar

nat nocere nobis *Verf.* Domine non secū-
 dum peccata nostra facias nobis *Res.* Ne-
 que secundum iniquitates nostras retribu-
 as nobis *Verf.* Oremus pro Pontifice no-
 stro N. *Res.* Dominus conservet eum, &
 vivificet eum, & beatum faciat eum in
 terra, & non tradat eum in animam ini-
 micorum eius *Verf.* Oremus pro benefac-
 toribus nostris. *Res.* Retribuere digna e
 Domine omnibus nobis bona facientibus
 propter nomen tuum vitā æternam, Amē.
Verf. Oremus Pro fidelibus defunctis,
Res. Requiem æternam dona eis Domine.
 & lux pæpetua luceat eis; *Verf.* Requiescāt
 in pace. *Res.* Amen. *Verf.* Pro fratribus
 nostris absentibus. *Res.* Salvos fac servos
 tuos, DEUS meus sperantes in te. *Verf.*
 Mitte eis Domine auxilium de sancto,
Res. Et de Sion tuere eos. *Verf.* Domine ex-
 audi orationem meam. *Res.* Et clamor
 meus ad te veniat.

Oremus

DEUS, cui proprium est misereri semper
 & parcere: suscipe deprecationem no-
 stram: ut nos & omnes famulos tuos, quos
 delictorum catena constringit, miseratione
 tuæ pietatis clementer absolvat.

Laudi, quasumus Domine, supplicum
 preces,

preces, & confitentium tibi parce peccatis: ut pariter nobis indulgentiam tribuas benignus & pacem.

Interabilem nobis, Domine misericordiam tuam clementer ostende: ut simul nos & a peccatis omnibus exuas, & a poenis, quas pro his meremur, eripias!

DEUS, qui culpa offenderis, poenitentiam placaris: preces populi tui supplicantis propitius respice: & flagella tua iracundiae, quae pro peccatis nostris meremur averte.

Omnipotens sempiternus DEUS, misere-re famulo tuo Pontifici nostro N. & dirige eum secundum tuam clementiam in viam salutis aeternae: ut te donante tibi placita cupiat, & tota virtute perficiat.

DEUS, à quo sancta desideria, recta consilia, & iusta sunt opera: da servis tuis illam, quam mundus dare non potest, pacem & corda nostra mandatis tuis dedita, & hostium sublata formidine, tempora sint tuae protectione tranquilla.

URe igne sancti Spiritus renes nostros; & cor nostrum Domine: ut tibi casto corpore serviamus, & mundo corde placeamus.

Fidelium DEUS omnium [Conditor & Redemptor, animabus famulorum famularumq;

mula umq; tuarum remissionem cuncto-
rum tribue peccatorum: ut indulgentiam,
qua semper optaverunt, piis supplicatio-
nibus consequantur

Orationes nostras, quaesumus Domine,
aspirando praeveni, & adjuvando pro-
sequere: ut cuncta nostra oratio & op-
ratio à te semper incipiat, & per te expta
finiatur.

Omnipotens sempiternae DEUS, qui vi-
vorum dominaris simul & mortuorū,
omniumque misereris, quos tuos fide & o-
pere futuros esse prænoscis: te supplices e-
xoramus, ut pro quibus effundere preces
decevimus, quosque vel praesens saeculum
adhuc in carne retinet, vel futurum jam e-
xutos corpore suscepit, intercedentibus o-
mnibus Sanctis tuis, pietatis tuae clemen-
tiā omnium delictorum suorum veniam
consequantur Per Dominum nostrum, &c.

Verf Domine exaudi orationem meam.

Res: Et clamor meus ad te veniat.

Verf: Exaudiat nos omnipotens & mi-
sericors Dominus, *Res*: Amen *Verf*: Et
fidelium animae per misericordiam DEI
requiescant in pace. *Res*: Amen,

sssss

ss

s

Lita,

LITANIÆ

De SS: Nomine IESU.

Kyrie eleison, Christe eleison,
Kyrie eleison.

JESU Christe, audi nos.

Jesu Christe exaudi nos.

Pater de cœlis DEUS, Miserere nobis.

Fili Redemptor mundi DEUS,

Spiritus sancte DEUS,

Sancta Trinitas unus DEUS,

Jesu Fili DEI vivi,

Jesu Fili MARIE Virginis,

Jesu Sanctissime,

Jesu potentissime,

Jesu fortissime,

Jesu Perfectissime,

Jesu gloriosissime,

Jesu piissime,

Jesu mirifice,

Jesu charissime,

Jesu dulcissime,

Jesu iucundissime,

Jesu clarissime,

Miserere nobis Miserere nobis.

Jesu

Jesu clarior Sole,
 Jesu pulchrior Luna,
 Jesu splendidior stellis,
 Jesu admirabilis,
 Jesu delectabilis,
 Jesu honorabilis,
 Jesu humillime,
 Je u pauperrime,
 Jesu sapientissime,
 Jesu obedientissime,
 Jesu castissime,
 Jesu amator castitatis,
 Jesu amator pacis,
 Jesu amator noster,
 Jesu speculum vite,
 Jesu exemplar virtutum,
 Jesu decus morum,
 Je u speculum perfectionis,
 Jesu zelator animarum,
 Jesu refugium nostrum,
 Jesu Pater pauperum,
 Jesu consolator afflictorum,
 Jesu thesaurus fidelium,
 Jesu gemma pretiosa,
 Jesu armarium perfectionis,
 Jesu stella maris,
 Jesu lux vera
 Jesu sapientia eterna

Miserere nobis.

Miserere nobis.

Jesu

Miserere nobis.

Miserere nobis.

Iesu bonitas infinita,
 Iesu salvator mundi,
 Iesu Mediator DEI & hominum,
 Iesu bone pastor ovium,
 Iesu benignissime,
 Iesu dilectissime,
 Iesu clementissime,
 Iesu desideratissime,
 Iesu mitissime,
 Iesu amantissime,
 Iesu amator fidelissime,
 Iesu amator noster,
 Iesu gaudium Angelorum,
 Iesu Rex Patriarcharum,
 Iesu Inspirator Prophetarum,
 Iesu Magister Apostolorum,
 Iesu Doctor Evangelistarum,
 Iesu fortitudo Martyrum,
 Iesu lumen Confessorum,
 Iesu sponse Virginum,
 Iesu corona Sanctorum omnium,

Propitius esto,

Pascenobis Iesu.

Propitius esto,

Exaudi nos Iesu.

Ab omni malo

Libera nos Iesu.

Ab omni periculo,

Lib:

Ab ira tua,

Lib:

Ab insidiis diaboli,

Lib:

A peste, fame, & bello,

Lib:

A

Miserere nobis.

Miserere nobis.

| | |
|-------------------------------------|------|
| A transgressione mandatorum tuorum, | Lib: |
| Ab incurſu omnium malorum, | Lib: |
| Per Incarnationem tuam, | Lib: |
| Per adventum tuum, | Lib: |
| Per Nativitatem tuam, | Lib: |
| Per dolores tuos, | Lib: |
| Per flagella tua, | Lib: |
| Per mortem tuam, | Lib: |
| Per Reſurrectionem tuam, | Lib: |
| Per Aſcenſionem tuam, | Lib: |
| Per gaudia tua, | Lib: |
| Per gloriam tuam, | Lib: |
| Per dulciſſimam V. Matrem tuam, | Lib: |
| Per interceſſionem omnium Sanctorum | Lib. |
| tuorum, | Lib. |

Agnus DEI, &c

Parce nobis Jeſu,

Agnus DEI, &c.

Exaudi nos Jeſu,

Agnus DEI, &c.

Miserere nobis.

Jeſu Chriſte,

audi nos.

Jeſu Chriſte,

Exaudi nos.

Kyrie eleiſon, Chriſte eleiſon, Kyrie eleiſon

Pater noſter. &c.

Verſ. Et ne nos inducas in tentationem

Reſ: Sed libera nos à malo.

Verſ. Benedic anima mea Domino.

Reſ. Et omnia qua intra nos ſunt nomini ſancto ejus.

Verſ. Sit nomen Domini benedictum.

Reſ,

Res. Ex hoc nunc & usque in sæculum.

V. Adjutorium m. s. in nomine Domini.

Res. Qui fecit cælum & terram.

Vers. Domine exaudi orationem meam.

Res. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus

Sanctis nominis tui Domine, timorem p. a-
riter & an. orem fac nos habere p. petu-
um; quia nunquam tuâ gubernatione de-
stituis, quos in soliditate tuæ dilectionis
instituis.

DEUS, qui gloriosissimum nomen JESU
Christi Filii tui, Domini nostri, fecisti
Fidelibus tuis summo suavitatis affectu a-
mabile, & malignis spiritibus tremendum,
atq; terribile. concede propitius, ut omnes,
qui hoc nomen JESU devote venerantur
in terris, sancta consolationis dulcedinem
in p. fecti percipiant & in futuro gaudi-
um exultationis & interminabilis beati-
tudinis obtineant in cælis. Per eundem
Dominum, &c.

SSSSSSSSSS

SSSSSS

* *
*

AF.

A F F E C T U S

erga S. Franciscum BORGIAM.

Illustre fidus Principum,
Francisce salve Maxime,
 Qui fatido cadavere,
 Vilo horruisti seculum,
 Averte nostra lumina,
 Ne vanitatem huariant:
 Sed in superum coelitem,
 Sint fixa sedem iugiter,
 Salve Columna Gandis,
 Et Religionis gloria.
 Qui aula relictâ Principis,
 Aulam peristi Numinis.
 Servos fideles coelitem,
 Servire fac nos Principi,
 Ut tecum eodem premio
 Fruamur, atque gaudio.
 Salve potestas demonum,
 Bellator invincibilis,
 Qui nobilis victoriis,
 Plaudens migasti e corpore,
 Ad versus infernalium,
 Tentationes hostium
 Nobis adlis fortissimum,
 In morte propugnaculum.

Antiph:

ad S. Fran: Borgiam

77

Antiph: Tæduit me vitæ meæ, videntem,
mala universa esse sub sole, & cuncta vani-
tatem, & afflictionem spiritûs.

Ver: Non aspiciam hominem ultra, &
habitorem quietis.

Res: Hæc requies mea in sæculum sæculi,
quoniam elegi eam.

Oratio.

OMnipotens sempiterne DEUS, qui spre-
tâ mundi vanitate B. Franciscû Borgi-
am ad societatem filii tui vocare dignatus
es: præsta quæsumus, ut quem eximie
sanctimonie exemplar habuimus in terris,
ejus coronæ participes fieri mereamur in
cælis Per Christum, Dominum nostrum,

Amen,

LITANIÆ

De B. Stanislao KOSTKA.

Kyrie eleison, Christe eleison,
Kyrie eleison.

Christe audi nos,

Christe exaudi nos.

Pater de Cælis DEUS, Miserere nobis.

Fili Redemptor mundi DEUS, Miserere

Spiritus Sancte DEUS, Miserere nobis.

Sancta Trinitas unus DEUS, Miserere nos

E

Sancta

| | |
|-------------------------------------|------|
| Sancta MARIA, | Ora: |
| Sancte Pater Ignati, | Ora: |
| Beate Stanislæ Kostka, | Ora: |
| Fili Matris Divinæ amantissime, | Ora: |
| Seraphine ardentissime, | Ora: |
| Exul felicissime, | Ora: |
| Constans Div: vocat: amator. | Ora: |
| Contemptor deliciarum, | Ora: |
| Juvenis Angelice, | Ora: |
| Bajule Christi, | Ora: |
| Exemplar juventutis, | Ora: |
| Salus debilium, | Ora: |
| Vita agonizantium, | Ora: |
| Miles Christi fortissime, | Ora: |
| Victor Erebi potentissime, | Ora: |
| Imago profundæ contemplationis, | Ora: |
| Fulcrum labentis Patriæ, | Ora: |
| Magnes cordium, cœlestium, | Ora: |
| Meta nostri desiderii, | Ora: |
| Idæa humilitatis, | Ora: |
| Speculum sanctitatis, | Ora: |
| Conviva mensæ cœlestis, | Ora: |
| Spes nostra, | Ora: |
| Victor mundi, | Ora: |
| Fortunatum naufragantis Patriæ pro- | |
| montorium, | Ora: |
| Compendium miraculorum, | Ora: |
| Vitæ emendatio, | Ora: |

Flamma

Flamma amoris Divini,

Ora:

Patrone mundi totius,

Ora:

Gloria Societatis JESU,

Ora:

Fulmen Turcarum,

Ora:

Classicum triumphale Militiæ Polonæ,

Ora pro nobis.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,

Parce nobis Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,

Exaudi nos Domine.

Agnus DEI, qui tollis peccata mundi,

Miserere nobis.

Christe audi nos, Christe exaudi nos,

Kyrie eleison, Christe eleison,

Kyrie eleison.

Pater noster, &c.

V: Et ne nos inducas in tentationem.

R. Sed libera nos à malo.

V: Ora pro nobis B. Stanislæ Kostka.

R. Ut digni efficiamur promissionibus Christi.

OREMUS.

DEUS, qui Beatum Stanislaum Kostkã inter primos Patronos nostræ Patriæ statuisti, præsta misericorditer ut illius intercessione muniti, ab omnibus hujus vitæ periculis liberi, æternam consequamur tranquillitatem, Per Christum Dominum nostrum, Amen. Ez AFEE.

A F F E C T U S

Erga B. Aloyfium GONZAGAM.

CAnduit noster Ludovicus illâ
Mente, qua semper fuit innocenti,
Ut suo crispa niveo bidentes
Vellere candent.

Lilium plusquàm nivei coloris
Integra viro tibi castitatis.
Semper ex largis oculis refuso
Floruit imbre.

Calcar in moles penetravit artus
Sæpius, quando minimè rebellem.
Punxit armatis laqueis vocata,
Purpura carnem;

Cum spondisset Diadema mundus,
Sceptra cum dives regio dedisset,
Sceptra Gonzaga, & Diadema, vanas,
Credidit umbras.

Veluti massam figulus squacem
Fingit, in quam vult agitare formam
Ductilem, sic te poterant superni
Flectere nutus.

Cum fatigabas precibus Beatos,
Et pia terram lachrymæ rigabant.
Vilus es crebro, quasi raptus ipsum
Cernere Numen,

Cessit è vivis Ludovicus omni,

Rite

Rite virtutum specie decorus,
Magna virtutum series beatæ

Tesse a vitæ?

Hoc tibi nostrum Ludovice carmen
Debito conor recitare voto,
Ut málum nobis medico propinquum,
Pollice pellas?

Ant: Aloyfi Gonzagarum decus, ho-
nor juventutis, Societatis ornamentum
castitatis liliū, flos obedientiæ, pauper-
tatis viola, rosa verecundiæ, virtutum o-
mnium millefolium, fac, ut qui brevī
vitæ compendio, grandævæ ætatis perfe-
ctionem comprehendisti, te hic imite-
mur, & ibi laudemus in sempiternum,

*Consumatus in brevi explebit tempora
multa.*

Placita enim erat Deo anima illius:

Oratio

DEUS, qui famulum tuum Aloysium ad
majorem nominis tui gloriam in So-
cietatem Filii tui vocare dignatus es, lar-
gire quæsumus, ut qui columbinæ innocen-
tiæ jubar imitabantur in terris, ejus gloriæ
participes fieri mereamur in cælis. Per
Christum Dominum nostrum, Amen.

Dilectus meus mihi, & ego illi, qui
pascitur inter lilia,

Es

V. Ole.

V. Oleum effusum, Aloyſi nomen tuum:

R. Adolescentuli dilexerunt te nimis.

Oratio.

O Beatissime Aloyſi, ſancte adoleſcens;
ô magne mundi victor, atque contem-
ptor; quem puriſſimis caſtitatis inſigni-
tum lilis, omnes homines latabundâ vo-
ce decantant, atque commendant. Obſe-
cro te toto cordis affectu, impetra mihi,
quod potes, à Deo, puriſſimæ caſtitatis, &
perfectæ humilitatis ſinceritate, J E S U
Chriſto Domino meo in ſua ſanctiſſima
Societate deſervire, Amen.

A F F E C T U S

Erga B. Joannem Fran. REGIS Soc: J:

Salve Franciſce Regiſ,

Meæ amor animæ,

Divinæ cultor legis,

JESU comes optimè,

Artes veneficarum,

In cunis eluſiſti,

A telis me noxarum

Serva, & caſu tristi.

Salve virtutum decor,

Exemplar pietatis,

Impetra Dive precor

Amorem

Amorem sanctitatis.

Tu Pater pupillorum,

Tu puritatis ara.

Oro stipem, ut morum

Sester quæque præclara,

Salve ô contemplator

Trinitatis optime,

Et jugis venerator

Aræ Divinissimæ,

Pervigil exorator

DEI, ad templi limen,

Fac mihi ut Creator

Omne condonet crimen;

V. Ora pro nobis Beate Joannes Francisce,

R. Ut digni efficiamur promissionibus Christi.

Oratio

DEUS, qui ad plurimos pro salute animarum perferendos labores, Beatum Joannem Franciscum Confessorem tuum mirabili charitate, & invicta patientiâ decorasti; concede propitius ut ejus exemplis instructi, & intercessionibus adjuvi æternæ vitæ præmia consequamur. Per Dominum nostrum JESUM Christum Filium tuum, qui tecum vivit & regnat in secula seculorum, Amen.

A F F E C T U S

Erga BB. Tres Martyres Japonenses,
IOANNĒ, PAULŪ, & JACOBŪ, Soci J.

Fortes avete milites;
Quorum cruore Japonēs.
Et purpascit inclytæ
Acer ferax Ecclesiæ,
Vestro hunc rigate sanguine;
Terrarumque cordis aridam;
Fœcunda fructus proferat,
Quos horreis cœli inferat,
Nares, & aures impie,
Tibi Tyranne tollito.
Mens verba Sponsi percipit,
Melosque gratum personat
Vitæ relictiis gaudiis,
Christo vocanti obtemperat.
Mundus vilescit, desipit,
Christusque solus perplacet.
Gratam Deo se victimam
In stipite crucis consecrant;
Ut veriores asseda
Christi sui sint Principis.
Nobis supremo à Numine
Constantiam deposcite.
Crucem ut feramus alacriter,
Ad usque finem fortiter, O gloriæ.

O gloriosi Martyres!

Vestrum, polorum Principi

Cruore fuso spiritum,

Qui reddidistis ultimum.

Cor nostrum amoris spiculo,

Offerte Christo saucium,

In spiritu vitæ ultimo,

Opemque nobis mittere,

V. Nos autem oportet gloriari in Cru-
ce Domini Nostri JESU Christi,

R. Per quem nobis mundus crucifixus
est, & nos mundo.

Oratio.

DEUS, qui Beatos Martyres tuos Jo-
annem, Paulum, & Jacobum, Marty-
rij gloriâ decorasti, concede quæsumus;
ut, quorum gloriæ coronam in cœlis ve-
nerantur, eorum fortitudinis exemplum,
& passionis constantiam imitemur in ter-
ris. Per Dominum nostrum, Amen.

LITANIÆ

De S. MICHAËLE ARCHANGELO,

Krie eleison, Christe eleison.

Kyrie eleison.

Christe audi nos, Christe exaudi nos.

Es

Pater

Pater de cœlis DEUS, Misere nobis.
 Fili Redemptor mundi DEUS, Misere:
 Spiritus Sancte DEUS, Misere:
 Sancta Trinitas unus DEUS, Misere:
 Sancta MARIA, Ora pro nobis.
 Sancta DEI Genitrix, Ora pro nobis,
 Sancta Virgo Virginum, Ora pro nobis.
 Sancte Michæl Archangele, Quò post
 Christum & MARIAM inter omnes Dei
 Creaturas, in donis gratiæ non surre-
 xit major, Ora pro nobis.
 Benedicte DEI Spiritus, nomine & re cõ-
 testas: Quis ut DEUS? Ora pro nobis.
 Supreme DEI Altissimi Ministet, Ora,
 Archidux Domini Sabaoth excellentissi-
 me, Ora.
 Majestatis Divinæ Propugnator fortissi-
 me, Ora.
 DEI Glorificator gloriosissime, Ora.
 Prime voluntatis Divinæ Executor exactis-
 sime, Ora,
 Æternæ sapientiæ Amator ardentissime,
 Ora pro nobis.
 Honori verbi incarnati Zelator intensis-
 sime, Ora pro nobis.
 Subjectionis ad Dominium DEI Professe
 perfectissime, Ora pro nobis,
 DEO debitæ Religionis & fidelitatis Ma-
 gister

gister laudabilissime. Ora pro nobis.

Prime bellorum Domini Ductor & Victor

in Sanguine Agni potentissime, Ora.

Angelorum, qui servaverunt suum Principi-

patum, Instructor illuminatissime, Orâ.

Angelorum, qui non servaverunt eundem,

in tartara fulminator & exterminator

terribilissime, Ora.

Vindex injuriarum DEI ignitissime, Ora.

Abyssi infernalis cum damnatis Obsecrator

justissime, Ora.

Angele pacis in coelo factæ, jucundissime,

Ora pro nobis.

Prime DEI Hominijs Confessor & testis fi-

delis, Ora.

Prime bravij Comprehenfor Beatissime,

Ora pro nobis.

Prime Societatis Seraphicæ Socie & Fun-

dator nobilissime, Ora.

Princeps de primis astantibus coram Thro-

no DEI, humillime, Ora.

Angelorum Sanctorum Phosphore & Anti-

lucifer fulgentissime, Ora.

Triumphantis Ecclesiæ ex Angelis & San-

ctis constitutæ, Patriarcha celsissime,

Ora pro nobis.

Sub uno Summo Imperatore DEO, omni-

um Spirituum Moderator, Director &

Eg

Guber-

Gubernator venerabilissime, Ora
 pro nobis.
 Princeps magne, qui stas pro Filiis Populi
 DEI, Ora.
 Militantis in utroque Testamento Ecclesie
 Protector & Custos providentissime, Ora.
 Fidelium Fideique Tutor invictissime, Ora.
 Zeli & amoris erga JESUM & MARIAM
 Incensor & Amplificator augustissime,
 Ora pro nobis.
 Nomine DEI apparetis Moyse ad bellum
 Pharaoni indicendum, Ora.
 Israelis per columnam nubis & ignis, Du-
 ctor constantissime, Ora.
 Balaami ne morere ediceret Israeli, ense evan-
 gelinato Pertesrefactor opportunissime,
 Ora pro nobis.
 Madianitarum, & Assyriorum, prostrator
 fortunatissime, Ora.
 Dux curruum ignitorum in circuitu Eli-
 sai prodigiosissime, Ora.
 Princeps exercitus Domini, confortans
 Josue, victoriosissime, Ora.
 Angelorum nos in hac vita custodientium
 Rector ordinatissime, Ora.
 Animarum Agonizantium Adjutor deside-
 ratissime, Ora.
 Animarum corporibus solutarum, Susce-
 ptor

ptor benignissime, Ora pro nobis
Tribunalis Christi Præses Meritorumq; Li-
berator accuratissime, Ora.
Purgatorij Administrator, Animarumq;
Consolator benevolentissime, Ora.
Benedictorum à DEO, in Beatitudinis Re-
gnum Introduktor gratiosissime, Ora,
Tempore Antichristi, pro Populo DEI vè-
rurè Præliator magnanime, Ora.
Crucis JESU Christi Redemptoris nostri,
signifer honoratissime, Ora.
In extremò DEI Iudicio, Antichristi In-
terfector zelosissime. Ora pro nobis.
Omnium Tui cultorum & Te invocantiū,
patrone mirifica, & Benefactor am-
plissime, Ora pro nobis.
Agnus DEI qui tollis peccata mundi,
Parce nobis Domine.
Agnus DEI qui tollis peccata mundi,
Exaudi nòs Domine.
Agnus DEI qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis.
Christe audi nos, Christe exaudinos;
Kyrie eleison, Christe eleison,
Kyrie eleison.
V. Ora pro nobis B. Michæel Archangele
R. Ut digni efficiamur promissionibus
Christi,

Ora

S. Michâéli gratissima, sicut ipse cuidam
Episcopo appârens asseruit.

Princeps gloriosissime Michâél, Dux celestium exercituum, susceptor animarum, debellator malorum spirituum, Ecclesiæ DEI, post Christum, admirabilis, grandis excellentiæ & virtutis Rector, omnes nos clamantes ad te, ab omni libera adversitate, & in omni cultu DEI facias proficere, tuo pretiosissimo officio, & dignissima prece.

Oremus:

OMnipotens sempiterne Deus, qui salvari humanæ naturæ, ex summa clementia tua, gloriosum Michâelem Archangelum, mirabiliter depurasti; concede propitius, ut ejus salutari subsidio hic mereamur ab omnibus hostibus defendi efficacissime, & in obitu nostro ab omni tentatione liberari, tuæ excelsæ Majestati beatifice per eum præsentari, Per Christum Dominum nostrum, Amen.

CULTUS

S. Angeli Custodis.

Calve Angele DEI, Princeps nobilissime:
mi Custos, & Protector amantissime, sal-

ve,

ve. Gaudeo, quod tantam tibi ded erit DE-
US excellentiam, & suā gratiā sanctifica-
verit, in qua, donec gratiam obtineres, per-
severasti. Gratias ago omnipotenti Deo,
pro beneficiis in te collatis; tibi verò pro
iis, quæ in me confers, & pro amore ac
voluptate, quā me custodis. Commendo
tibi hodie, & in perpetuum, corpus, cor,
& animam meam, memoriam, intellectu, &
& voluntatem meam, appetitus meos, &
sensus omnes; ut me custodias, dirigas,
protegas, & gubernes; ac simul purifices, &
illumines; ac perficias ita, ut omnibus
bonis per te plenus, perseverem semper in
gratia, donec simul tecum Deum meum
videam, & eo fruor in gloria. Amen.

V. Angelis suis mandavit de te,

R, Ut custodiāt te in omnibus viis tuis.

V. Domine exaudi orationem meam:

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oremus.

Omnipotens sempiterne DEus, qui in-
effabilis bonitatis tuæ consilio, cun-
ctis Fidelibus ab utero Matris custodem
corporis, & animæ, specialem Angelum de-
putasti, concede, ut quem mihi misericor-
diter tribuisti, sic observem & diligam, ut
gratiæ tuæ munere, illiusq; custodiæ mu-
nimine

nimine proteſtus, in cœleſti Patria, vultū
gloriæ tuæ cum illo, & cæteris Angelis
merear contemplari. Per Dominum no-
ſtrum Jeſum Chriſtum, Filium tuum
Amen.

HYMNODIA

De S. JOSEPHO.

- I. **S**alve Pater Salvatoris,
Salve Cuſtos Redemptoris,
Joſeph ter amabilis.
Salve Sponſe Matris DEI,
Salve hospes JESU mei,
Joſeph ter amabilis.
2. Dulces cunæ, dulces panni,
Dulces dies, dulces anni,
Dum nutriſti Dominum,
O quam fuit admiranda,
Tua viſta veneranda,
Habens DEI Filium,
3. JESUM oculis vidisti.
Et in brachiis tulisti,
O ſcavis felicitas!
Genis genas admoviſti,
Oſcula dans accepisti,
O felix ſcavitas.
4. Modò DEUM appellasti,
Modò Regem nominasti,
Inter mille gaudia.

Modò

Modò Patrem adorandum,
Modo natum adamandum,
Inter mille basia.

5. JESUM brachiis tenere,
Atque totum possidere,
O quantæ divitiæ!

Cum MARIA conversari,
DEI natum amplexari,
O quantæ deliciæ.

6. Qui est homo, qui amare,
Atque JESULUM portare,
Nollet suis brachiis!

Nullus est, qui non ambiret,
Et qui cupas non adiret
Pro tantis deliciis.

7. O mi Ioseph plus amande,
Et præ cunctis honorande,
O flos pudicitæ!

Tibi tanta fors est data,
Quanta nulli est collata
Ab Authore gratiæ,

8. O felicem & beatum,
Custodiri cui est datum,
Tuo sub præsidio:

Et qui meruit habere,
Te Patronum & gaudere,
Tuo Patrocinio.

9. Per MARIE Tuz Matris,
Preces & Iosephi Patris,
JESU Tu nos adjuva.

Ut possimus Te videre,
Et æternum possidere,
In cælesti Patria, Amen.

Antiph Salve Patriarcharum decus, &
Ecclesiæ sanctæ DEI œconome, cui pa-
nem vitæ, & frumentum Electorum con-
servasti.

V. Ora pro nobis Beatissime Ioseph.

R. Ut digni efficiamur promissionibus
Christi.

OREMUS.

SANCTISSIMÆ Genitricis Tuz Sponsi quæ-
sumus Domine meritis adjuvemur, ut,
quod possibilitas nostra non obtinet, ejus
nobis intercessione dovetur. Qui
vivid & regnas cum DEO Patre in unita-
te Spiritûs S. DEUS, per omnia sæcula
sæculorum, Amen.

ORATIO.

Ad S. JOANNEM BAPTISTAM.

Antiph Hic est præcurtor dilectus, &
lucerna lucens ante Dominum, ipse est e-
nim Ioannes, Qui viam Domino præpara-
vit in eremo, sed & Agnum DEI demon-
stravit,

stravit, & illustravit mentes hominum.
De quo Sálvator ait: Nullus major inter
natos mulierum Joanne Baptista.

Elisabeth Zachariæ magnum virum genuit.
Joannem Baptistam præcursores Domini.

O R E M U S

SANCTE Joánnes Baptista, qui necdum
natus, à necdum nato DEO infante vi-
sitatus, ad Mariæ vocem in gaudio exulta-
sti, Sanctificate in utero, nate sine peccato
ullo; ora pro me, ut in vitam Sanctam re-
nascar æternitati: Magne & Sancte Præ-
cursor Christi, sis Ductor meus in viam o-
mnium virtutum, sis Ductor in viam æter-
nitatis. Tu qui pœnitentiã predicabas, im-
petra mihi, ut anima mea dignos pœniten-
tiæ fructus quàm primùm generet. Tu qui
es vox clamantis in deserto, alloquere effi-
caciter animam meam, alloquere cor me-
um, corpus meum, omnes sensus meos, ut
in omnibus Deum quærant, ac super o-
mnia ament, Amen.

DEVOTIO

Ad S. JUDAM Apostolum.

SANCTUS JUDAS piz cuidam personæ spe-
ciabilis; non sine querulo animi sensu
testatus fuit, nimirum paucos se ex omni-
bus hominum

hominum forte cultores numerare, cum
tamen Deus plurimas ijs, si qui forent,
gratias preparaverit. Expositi id sunt pluri
rimi, maxime, qui in rebus desera s. ac
pravi cogitationibus repellendis, ejus opem
imploraverunt, Et quid non à Deo
magnus iste Sanctus impetrare valeat, qui
non solum parentem utrumque, fratres
ternos & binas sorores cum totidem nepo
tibus, à sanctitate conspicuos est sortitus,
sed arcta cum Christo ipso cognatione
conjunctus, & cum eodem educatus
fuit.

Hic Coapostolis omnibus prior Evan
gelium prædicavit, Iudæam, Galilæam, Sa
mariam, Persidem, Idumæam, Arabiam,
Syriam, Mesopotamiâ eo fructu peragra
vit, ut in Syria cum Rege (quem per a
quam Baptismi à lepra mundavit) pluri
mos converterit, in Babylone Regem cum
60 hominum millibus baptizaverit, ubi
que prodigijs clarus, cum sola præsentia
idolis indixit silentium, interceptam vi
dendi, loquendique facultatem signo Cru
cis restituit, serpentes innoxia manu tra
ctavit. Verbo, Divo huic omnes creature,
in miracula obtemperavere, quæ omnia
morte gloriosa, fustibus interemptus, co
ronavit.

monavit, Qui tanta fecit in Vita, maiora
præstabit in gloria, modo tu eius patro-
cinium constanti cultu demerearis.

Antiph. Qui timet DEUM, faciet bo-
na, & qui continens est iustitia, apprehen-
det illam & obviabit illi, qua est Mater
honorificata *Ecclesiæ 15.*

S. Iuda Patrone fidelissime,
Placato nobis Deum clementer.

OREMUS.

DEUS, cujus bonitas, & clementia ex-
hauriri non potest, aures benignitatis
tuæ famulorum, famularumque tuarum
precibus inclina, & præsta: ut omnes, qui
se in Apostolo tuo Iuda Thadeo devotè
recolunt, meritis ejus efficacibus petitio-
nis suæ effectum consequantur, Amen.

ORATIO

Ad S. IUDAM Apostolum.

Sancie JUDA ora pro me,
Et omnibus qui colunt te.

OREMUS.

Corioso Christi cognate Apostole, &
Martyr, S. IUDA, qui vastissimis in
regionibus fidem effertis gentibus disse-
minasti virtutibus ac miraculis clarus in-
numerabiles filios IESU CHRISTO pe-
deristi, per illum, qui Te sibi Aposto-
lum

lum adscivit, precor, ut me miserum à
 consuetudine peccatorum meorum abstra-
 has, à cogitationibus immundis me tuis
 meritis præserves, & in rebus desperatis
 tuò mihi adis patrocinio; ac tandem
 ad coelestem gloriam tuis præcibus eve-
 has, ubi Sancta Trinitas adoratur in Pa-
 tre, Filio, & Spiritu sancto, Amen.

CULTUS

S. Adalberti Episcopi & Martyris R: P:
 Patroni.

Alve Pater pauperum,
 Margarita Principum,
 Speculum Antistitum,
 Gemma Christi pugilum.

Qui pro Ducis gloria,
 Trina ictus lanceâ,
 Inter sacrificium,
 Reddidisti spiritum!

Da mihi labillum,
 In extrema temporum,
 Hora, dilectissimum
 Invenire Dominum.

V. Judicabit Dominus populum suum.
 Alleluia,

R. Et in servis suis consolabitur DE-
 US. Alleluia,

ORE-

OREMUS

Tuam nobis indulgentiam quaesumus
Domine B Adalbertus Episcopus &
Martyr imploret, ut delicta nobis cle-
menter ignoscas, & beneficia desiderata
concedas.

CULTUS

S. STANISLAI Episcopi & Mart: R. P:
PATRONI,

Salve inbar sarmatiz,
Polonæ apex gloriæ,
En mundus gemit exul,
STANISLAE magne Præsul,
Manum benignam porridge,
Genus Polonum erige,
Ne cadat robur subito,
Et vires novas addito.

Tege Patriam purpura,
Pellas hostium murmura.
Loricam præbe spiculis.
Manum obtendens jaculis.

Per te florescat æquitas,
Sceptra portentat vetitas,
Fides avita vigeat,
Hæresis, schisma pereat.

Antiph: Vir inclyte STANISLAE vitâ in-
signis, passione, plebem tuam Pastor bo-
ne

ne, fove benedictione; governa protectione, salva sancta intercessionem.

V. Ora pro nobis Sancte Stanislae,

R. Ut digni efficiamur promissionibus Christi.

ORATIO.

DEUS, pro cuius honore gloriosus Potitex STANISLAUS gladiis impiorum occubuit, presta quæsumus, ut omnes, qui ejus implorant auxilium petitionis suæ salutare consequantur effectum, Per Christum Dominum nostrum, Amen.

RESPONSORIUM

S. Bonaventuræ ad S. ANTONIUM
de Padva.

SI quis miracula, mors, terror, calamitas, demon, lepra fugiunt, ægri surgunt sani.

Pereunt pericula, cessat & necessitas: narrent hi, qui sentiunt, dicant Padvani.

Cedunt mare, vincula, membra, resque perditas petunt, & accipiunt juvenes, & canes.

Gloria Patri, & Filio, & Spiritui sancto, sicut erat in principio, & nunc & semper, & in sæcula sæculorum Amen.

V. Ora pro nobis Beate Antoni,

R.

R. Ut digni efficiamur promissionibus Christi.

OREMUS.

O Mitissime ac benignissime Domine JESU Christe, qui B. Antonium Confessorem tuum, perpetuo miraculorum & prodigiorum splendore illustras: concede nobis misericorditer, ut id, quod per merita ejus confidenter efflagitamus, ejus intercessione efficaciter consequi valeamus. Qui vivis & regnas in secula seculorum. Amen.

ORATIO AD S. ANTONIUM:

de Padua Patronum.

O Sancte Antoni de Padua candidum & elegans liliū virginitalis, pretiosum monile paupertatis speculum abstinentiæ, forma puritatis, Stella splendens sanctitatis, ornamentum morum, pulchritudo Paradisi, columna sanctæ Ecclesiæ, Prædicator gratiæ, extirpator vitiorum, seminator virtutum, consolator afflictorum, ardentissimus igne Divini amoris, & viva flamma charitatis, qui traxisti Filium DEI in tua brachia, & tua ignita prædicatione accendisti peccatores ardenti igne charitatis, Martyr desiderio, Divinus Propheta; terror demonum,
E
heros

horror inferni, & hortus omnium deliciarum. Ego pauperculus & miser peccator affectu amoroso te rogo, & supplico, ut me teneas sub tua protectione, & impetres mihi veram contritionem peccatorum meorum, humilitatem, donum lachrymarum, sanctam contemplationem, & cum sis ignis ardentissimus charitatis, te rogo, ut velis accendere hoc meum cor aridum & siccum, ut accensus igne Divini amoris, reliquam me ipsum, mundum, Diabolum & carnem, Amen.

CULTUS

S. CATHARINÆ Virgi & M.

GAUDE Virgo Catharina,
Quam refecit lux Divina.

Tecum quaternis nobilibus

Gaude, quod tuâ doctrinâ,
Philosophos à ruina,

Traxisti & erroribus,

Gaude, quia meruisti,

Confortari voce Christi,

Per preces divinitus.

Gaude, quia convertisti,

Spensam Regis, & vidisti,

Rotas fractas cœlitus,

Gaude, sanctis coronata,

Et in Sina venerata,

Olei Stilamine.

Esse nobis advocata,

Apud Deum Virgo grata,

In nostro certamine.

Diffusa est gratia in labiis tuis,

Propterea benedixit te Deus in æternum,

Oremus.

OMnipotens sempiterne Deus ineffabilem misericordiam tuam suppliciter deprecamur; ut sicut liquor de membris beata Virginis & martyris tue Catharinæ jugiter manans languidorum corpora sanat sic ejus S. Oratio à nobis iniquitates expellat, graves tentationes, & impugnationes Daemonis compescat: omnia mala à nobis avertat, in bono confortet, certantes in agone confirmet, & feliciter ex corpore hoc egressos, Tue Majestati in Regno coelorum præsentet. Per Dominum nostrum JESUM Christum Filium tuum, Amen.

ORATIO ad S. CATHARINAM

pro profectu in literis.

OS. Catharina, V. & Martyr, Christi Sponsa fidelissima, rogo te per illas gratias & favores speciales, quibus te prævenit Dulcissimus Sponsus tuus JESUS,

Et

us

ut superatis Tyranni lenocinis, sapientiâ
 tuâ quouageros vinceres Philosophos,
 eosq; cœlesti imbuto doctrinâ ad veram
 fidei lumen perduceres, impetra mihi cum
 cœlesti temporalem quoq; sapientiam, ut
 devictis infernalis Tyranni fraudibus mû-
 diq; & carnis blanditiis, aptum Divinæ
 gloriæ, fideiq; Catholicæ propagandæ in-
 strumentum evadam, ac tandem JESUM
 Ducem nostrum laudem & benedicam
 in omnem æternitatem Amen.

CULTUS

S. BARBARÆ Virg: & Mart:

Cupplio tibi sanctissima V. & Martyr
 Christi Barbara, ut subvenias mihi fa-
 famulo tuo in omnibus necessitatibus &
 angustiis meis, ad te enim suspicio, ad te
 etiam oculos meos, & cor meum dirigo;
 te mihi in advocatam eligo, tuæ prote-
 ctioni animam corpus meum committo.
 Tu clementissima Virgo esto mihi in digno
 famulo tuo in tribulatione solatium, in
 omni perturbatione refugium, Circunda
 me tuæ defensionis muro inexpugnabili,
 contra omnes inimicos meos visibiles, &
 contra omnia pericula corporis & animæ,
 & esto mihi auxiliarix specialissima apud
 misericordem Deum, ut non secundum

Barbara

merita mea suat me puniri, sed per tuum intervēntum consequi merear tecum in cœlestibus gaudere, Amen.

O Sanctissima Virgo Barbara, quodcūq; Sponsi tui viribûs potes, mihi in mortis articulo, obsecro, ut suppedites Adjuvā me miserum, nè in peccatis moriar, Effectum tunc habeat tuā intercessionē primitus à Christo tibi facta promissio, cum fidem ejus sanguine tuo consecrares Redeat in memoriam, Sponso tuo Virgineus collō tuo exuberans sanguis, recordetur ardentissimæ tuæ charitatiss; nec animam meam à corpore exire permittat nisi confessione expiatam SS. Eucharistiæ Sacramento refectam, Amen.

Hæc oratione Heuticus Kock ad ossa usque exstus, obtinuit esse superstes usque dum confiteretur. & communicaret.

HTMNVS ad S. ROSALIAM

Virgi contra Pestem.

Ave Rosa sine spina,
Contra pestem medicina.

Rosalia Dux inclita.

Recens à mundo cognita,

Exemplum secuta Christi,

Mundum relinquens sprevis,

Quidquid Pater offerebat;

Quidquid Aula promittebat
 Ad montana procuristi,
 Specum ferro pertudisti,
 Monitorem ut haberes,
 Propositi, quem videres,
 Angeli te docuerunt.
 Modum novum ostenderunt.
 Quo Deo preces solveres,
 Rosas fragrantis mitteres.
 Antrum, calum habuisti,
 In quo Christum conspexisti;
 Apostolis comitatum
 Angelis, Matre, stipatum,
 Ab hoc coronâ donata;
 Ad nuptias invitata;
 Te ras libens reliquisti.
 Coelum felix introisti.
 Tria sacra post hæc Offa;
 Nulla unquam textit fossa,
 Sed rupes aquam jugiter
 Stillans oclusit fortiter.
 Post tot secula revelata;
 In Patronam orbi da a:
 Contra pestem nobis fave;
 Dum tibi sonamus Ave,
 Laus hono Majestati,
 Vni Trina Deitati,
 Rosaliam exaltanti,

ad S. Barbaram

103

Pestem per eam sedanti. Amen.

Antiph. Veni, Sponsa Christi, recipe coronam, quā tibi Dominus preparavit in æternum.

Oremus,

DEus qui corpus famulæ tuæ B. Rosaliæ Virginis, per tot secula; intra montes inventū, contra sævientem pestilentiam sacrum amuletum fidelibus tuis esse voluisti, præsta supplicibus: ut qui sacras eius reliquias colimus & commemoratione lætamur ejus quoq; interuenientibus meritis à præsentibus periculis & à malo pestilentie liberemur: Per Christum Dominum Amen.
Hymnus ad S. Apolloniam, V.

Et M contra dentium dolorem

Virgo Dei egregia,

Pro nobis Apollonia,

Funde preces ad Dominum,

Vt tollat omne noxium.

Nè pro reatu criminum

Morbô vexemur dentium;

Sed sanitate corporis,

Gratulemur & capitis.

Specie tuâ & pulchritudine tua.

Intēde prospere, procede; & regna

Oremus,

F4

Reus

Leus, pro cuius Sanctissimi nominis honore, B. Apollonia Virgo & Martyr gloriosa a natam & horribilem dentium excussione sustinuisti Præsta quæsumus, ut qui ejus memoriâ piâ devotione frequentant, eos retro dentium dolore immunes custodias, & post hujus vitæ ærumnas, ad beatæ Patris gaudia perducas Per Christum Dominum nostrum, Amen.

C U L T U S

S. Patroni Menstrui

Dive, quem cæli Dominus Patronum,

Mense præsentî mihi destinavit;
Cælitus, clemens opis indigentem
Cerne clientem.

Me pîæ Jîsû precor, & benigne
Virginis Mariæ, fidei tuendum,
Virbis & Divis reliquis supèrnis:
Civibus offer.

Usq; ad æternæ Beatos;
Lîmites serva famulum, potiri
Lætus ut tandē valeam perennis
Lumine vitæ.

V. Ora pro nobis S. N.

R, Ut digni efficiamur promissionibus
Christi.

ORATIO

O R A T I O.

DEUS tuorum gloria Sanctorum, præſta quaſumus, ut interceſſione Sancti tui N, Patroni mei liberer à cunctis malis animæ & corporis, ac eodem Duce, ac comite; ſecurus ad vitam perveniam ſempiternam, Amen.

O R A T I O:

Ad Sanctum cuius Feſtum colitur.

Veneror & ſaluto te ô Beatiffime N. per dulciſſimum CORIEſU Chriſti: & ex animo tibi congratulor illū honorē quo hodie aſſumptionis tuæ à Deo, & tota Cæli Curia es affectus In augmentum gaudij & gloriæ tuæ offero tibi id ipſum ſuper digniſſimum Cor JESU Chriſti, rogans, ut Deum pro me exorare, mihiq; in morte mea aſſiſtere digneris, Amen.

Oratio ante Studia.

Creator ineffabilis, qui de theſauris apientiæ tuæ, tres Angelorum hierarchias, & eas ſupra cælum Empyreum in ſto ordine collocaſti, arque elegantiffime per partes univerſi diſtribuiſti. Tu inquam qui verus fons luminis & ſapientię, arque ſupereminens principium diceris: te inſundere digneris ſupra intellectus mei tenebras

Es

bras

Bras, tux radium claritatis; duplices; in quibus natus sum, à me removens tenebras, peccatum scilicet & ignorantiam. Qui linguas infantium facis esse discretas, linguam meam erudias atque in labiis meis gratiam tux benedictionis infundas. Da mihi intelligendi acumen, retinendi capacitatem, interpretandi, subtilitatem, addiscendi facilitatem loquendi gratiam copiosam: ingressum instruas, progressum compleas. Per Dominum nostrum. A.

Oratio ante Studia ad B. Virginem.

O Sedes sapientius Beatissima Virgo MARIA! o Tabernaculum Spiritus Sancti! o Liber septem signaculis S. Spiritus oblagate, scripte intus & foris Divini amoris penicillo, in quo sunt omnes thesauri sapientie & scientie Dei reconditi. O Dulcissima Sponsa Spiritus Sancti fac queso per immaculatam Conceptionem tuam, ut linguam meam erudias, atque in labiis meis gratiam tue benedictionis infundas. Impetra mihi intelligendi facilitatem, retinendi capacitatem, interpretandi subtilitatem, loquendi gratiam copiosam, Amen;



H O R A

OFFICII MARIANI.

O F F I C I U M

De Immaculata &c:

Hoc Officium ad Affectus suavissimos in animis legentium concitandos peridoneum, quam gratum sit Beata Virgini, ipsa Alphonso Rodriguez Societatis Jesu Religioso miraculis in vita, & post mortem claro indicabit, cui officium hoc recitanti sapientius apparuit, & ut typis divulgandum curaret, in mandatis dedit; sic in ejus vita. Approbatum est à Paulo V: què ad perpetuam rei memoriam concessit omnibus Christi fidelibus idem officium cum oratione de immaculata conceptione recitantibus 100 dierum Indulgentias, ut patet ex brevi expresso Dato Romæ ad S. Mariæ Majoris VI. Idus Julii, M. DC. XV.

A D M A T U T I N U M.

E

V. Fja

Ps.

Officium.

V. Eja mea labia nunc annuntiate.
R. Laudes, & Praconia Virg Beatæ.
V. Domina in adiutorium meum intende.
R. Me de manu hostium potenter de-
fende.
Gloria Patri, & Filio, & Spiritui san-
cto, &c.

Hymnus.

Salve mundi Domina,
Cœlorum Regina,
Salve Virgo Virginia,
Stella matutina.
Salve plena gratia,
Clara lux divina
Mundi in auxilium,
Domina festina,
Ab æterno Dominus,
Te præordinavit,
Matrem unigeniti,
Verbi, quo creavit,
Terram, pontum, æthera,
Te pulchram ornavit.
Sibi sponsam, ut in qua,
Adam non peccavit.
V. Elegit eam Deus, & prælegit eam.
R. Et in tabernaculo suo habitare fe-
cit eam.
V. Domina exaudi orationem meam,
R. Et

R. Et clamor meus ad te veniat.

O R E M U S.

SANCTA Maria Regina cœlorum
Mater Domini IESU Christi, & munda
di Domina, quæ nullum derelinquis,
& nullum despicias; respice me Domina
elementer oculò pietatis, & impetra
mihi apud dilectum filium tuum cun-
ctorum veniam peccatorum. ut qui nunc
tuam sanctam conceptionem devoto affe-
ctu recolo, æterno in futurum beatitu-
dinis brauium capiam, ipso, quem virgo
peperisti, donante Domino Iesu Christo:
qui cum Patre, & sancto Spiritu vivit,
& regnat in Trinitate perfecta Deus in
secula seculorum Amen;

V. Domina exaudi orationem meam.

R. Et clamor meus ad te veniat.

V. Benedicamus Domino.

R. Deo gratias,

V. Et fidelium animæ per misericordiam
Dei requiescant in pace.

R. Amen.

A D P R I M A M.

V. Domina in adiutorium meum inten-
de.

R. Me de manu hostium potenter de-
fende.

Gloria

Gloria Patri, & Filio, & Spiritui, &c.

Hymnus.

Salve Virgo sapiens,
 Domus Deo grata,
 Columna septemplici,
 Mansaque exornata:
 Ab omni conagio
 Mundi preservata,
 Ante sancta in utero,
 Parentis, quàm nata.
 Tu Mater viventium,
 Et porta es Sanctorum,
 Nova stella ex Iacob,
 Domina Angelorum,
 Zabulo terribilis,
 Acies Castrorum,
 Portus & refugium,
 Sis Christianorum.

V. Ipse creavit eam in Spiritu Sancto.
 R. Et effudit illam super omnia opera
 sua.

V. Domina exaudi orationem meam.

R. Et clamor meus ad te veniat.

Oratio ut supra. S. Maria Regina &c.

A D T E R T I A M.

V. Domina in adiutorium meum in
 tende.

R. Me de manu hostium potenter defende
 Gloria

Gloria Patri, & Filio, & Spiritui, &c.

Hymnus.

S Alve Arca faderis,
S Thronus Salomonis,
Arcus pulcher ætheris,
Rubus visionis,
Virga frondens germinis,
Vellus Gedeonis,
Porta clausa Numinis,
Et favus Samsonis,
Decebat tam nobilem
Natum Præcavere,
Te ab originali,
Labe Matris. *Evangelium:*
Almam quam elegerat,
Genitricem, vere
Nulli prorsus patiens
Culpe subiacere.
V. Ego in altissimis habito.
R. Et thronus meus in columna nubis.
V. Domina exaudi orationem meam.
R. Et clamor meus ad te veniat
Oratio ut supra, Sancta Maria, &c.

A D S E X T A M.

V. Domina in adiutorium meum in-
tende.
R. Me de manu hostium potenter de-
fende.

Gloria

Gloria Patri, & Filio & Spiritui, &c.

Hymnus.

Salve, o puerpera,
 Templum Tonitarris,
 Angelorum gaudium,
 Cella puritatis,
 Solamen mœrentium
 Hortus voluptatis
 Palma patientiæ,
 Cedrus castitatis,
 Terra es benedicta,
 Et Sacerdotalis,
 Sancta atque immunis.
 Culpe originalis,
 Civitas Altissimi,
 Porta Orientalis.
 In te est omnis gratia,
 Virgo Singularis
 V. Sicut liliū inter spinas.
 R. Sic amica mea inter fīas Adz.
 V. Domina exaudi orationem meam,
 R. Et clamor meus ad te venias.
 Oratio ut supra Sancta Maria,
 A D N O N A M.
 V. Domina in adiutorium meum intende
 R. Me de manu hostium potenter defende.
 Gloria Patri, & Filio, & Spiritui, &c.

Hymnus.

Salve

Salve urbs refugii,
Turrisque munita,
David propugnaculis,
Armisque insignita,
Te in conceptione,
Charitate ignita,
Infernalis potestas
Est à te contrita.
Eia mulier fortis
Et invicta Judith
Pulchra Abisai virgo?
Verum fovens David,
Rachel Procuratorem
Ægypti gestavia:
Sed Salvatorem mundi
Maria portavit.

V. Tota pulchra es amica mea.

R. Et macula originalis nunquam it in tei

V. Domina exaudi orationem meam

R. Et clamor meus ad te veniat,

Oratio ut supra Sancta Maria, &c.

V. Domina in adiutorium meum intende

R. Me de manu hostium potenter defende.

Gloria Patri, & Filio, & Spiritui, &c.

Hymnus.

Salve Horologium

Quo retro trahatur.

Sol in decem lineis;

Verbum incarnatur,

Homo

Homo ut ab inferis,
 Ad summa tollatur;
 Imensus ab Angelis
 Paulo minoratur,
 Solis huius radiis
 Maria coruscat,
 Et confurgens Aurora
 In conceptu micat,
 Liliū inter spinas
 Quæ serpentis terat
 Capat pulchra in Luna
 Errantes collustrat.

V. Ego feci in Coelis; ut oriatur Im-
 men indeficiens

R. Et quasi nebula texi omnem terram.

V. Domina exaudi orationem meam,

R. Et clamor meus ad te veniat

Oratio ut supra Sancta Maria, &c,

V. Convertat nōs Domina tuis precibus
 placatus Iesus Chri: Filius tuus

R. Et avertat iram suam à nobis

V. Domina in adiutorium meum intende.

R. Me de manu hostium potenter de-
 fendē.

Gloria Patri, & Filio, & Spiritui &c.

Hymnus

Salve Virgo nobilis,

Mater illibata,

Regina

Regina clementia;
Stellis coronata,
Supra omnes Angelos,
Pura, immaculata,
Atque ad Regis dexteram
Stans veste inaurata:
Per te Mater gratia.
Dulcis spes reorum
Refulgens Stella maris,
Portus naufragorum,
Patens Coeli janua,
Salus infirmorum,
Videamus Tiadem
In aula Sanctorum.
V. Oleum effusa n. Maria nomen tuum
R. Se vi tui dilexerunt te nimis.
V. Domina exaudi orationem meam:
R. Et clamor meus ad te veniat.
Oratio ut supra. Sancta Maria, &c.

Commendatio

Supplices offerimus.
Tibi Virgo pia.
Has horas Canonicas
Fac nos ut in via
Ducas cursu prospero,
Et in agonia
Praesens nobis assiste,
O dulcis Maria.

Hæc est

Hæc est virga, in qua nec nodus originalis, nec cortex actualis culpe fuit

S. Ambrosius

V. In Conceptione tua Virgo immaculata fuisti.

R. Ora pro nobis Patrem, cuius Filium peperisti.

O R E M U S.

Deus qui per immaculatam Virginis Conceptionem dignum Filio tuo habitaculum preparasti, quaesumus; ut sicut ex morte eiusdem Filii tui prævisa, eam ab omni labe præservasti, ita nos quoque mundo ejus intercessionem ad te pervenire concedas: Per eundem Dominum nostrum Iesum Christum Filium tuum, qui tecum vivit, & regnat in unitate Spiritus Sancti Deus, per omnia sæcula sæculorum, Amen.

L I T A N I Æ

D E

B E A T A M A R I A

VIRGINE.

V I R G I N E,

*In ade Lauretana dici solita.***K** Teie eleison Christe eleison

Kyrie eleison:

Christe audinos

Christe exaudi nos.

Pater de Coelis Deus, miserere nobis,

Fili Redemptor mundi Deus, misere,

Spiritus Sancte Deus, miserere nobis.

Sancta Trinitas unus Deus miserere nobis,

Sancta MARIA, Ora pro nobis

Sancta Dei Genitrix Ora pro nobis.

Sancta Virgo Virginum,

Mater Christi,

Mater divine gratia,

Mater purissima,

Mater celsissima,

Mater inviolata,

Mater intemerata,

Mater amabilis,

Mater admirabilis,

Mater Creatoris,

Mater Salvatoris,

Virgo prudentissima,

Virgo veneranda,

Virgo pradicanda,

Ora pro nobis

Virgo

Virgo potens,
 Virgo clemens,
 Virgo fidelis,
 Speculum iustitiæ,
 Sedes sapientiæ,
 Causa nostræ latitiæ,
 Vas spirituale,
 Vas honorabile,
 Vas insigne devotionis,
 Rosa mystica,
 Turris Davidica,
 Turris eburnea,
 Domus aurea,
 Fœderis arca,
 Janua Cœli,
 Stella matutina,
 Salus infirmorum,
 Refugium peccatorum,
 Consolatrix afflictorum,
 Auxilium Christianorum,
 Regina Angelorum,
 Regina Patriarcharum,
 Regina Prophetarum,
 Regina Apostolorum,
 Regina Martyrum,
 Regina Confessorum,
 Regina Virginum,
 Regina Sanctorum omnium,

Agnus

Ora pro nobis

Ora pro nobis

Ora pro nobis

Agnus Dei, qui tollis peccata mundi,
Parce nobis Domine.

Agnus Dei, qui tollis peccata mundi,
Exaudi nos Domine.

Agnus Dei, qui tollis peccata mundi,
Miserere nobis.

Christe audi nos.

Christe exaudi nos.

Kyrie eleison.

Christe eleison,

Kyrie eleison.

Sub tuum praesidium confugimus sancta
Dei Genitrix, nostras deprecationes ne
despicias in necessitatibus, nostris, sed
a periculis cunctis libera nos Virgo sem-
per gloriosa, & benedicta: Domina
nostra, Advocata nostra, tuo Filio nos
commenda, tuo Filio nos reconcilia, tuo
Filio nos representa. *Ave Maria.*

Ora pro nobis Sancta Dei Genitrix.

Ut digni efficiamur promissionibus Chri-
sti.

Oremus

Defende quaesumus Domine Beata Ma-
ria semper Virgine intercedente istam
ab omni adversitate familiam, & toto
corde tibi prostratam ab hostium propitius
tuere clementer insidiis, Per Christum
Dominum, &c. LORA

H O R A

Confessionis & Communionis
S A C R Æ*Precatio ante Confessionem*

C Domine, lacrymas, contritionem, misericordiam, & veniam humiliter efflagito, qui veniam publicanis, larronibus, non denegasti ne patieris me diutius per contritionis desiderio languere, aut interire. Premunt cor meum mala quæ non sum verecundatus facere in facie Coeli. Video, ah me! adversum tui mi DEUS irati vultum, heu! heu! quis me liberabit à perditione mala hac? quis placabit Vindicem Deum? plorans plorabit anima mea, gemitus sub pondere peccatorum. Ah damnus! Filii ego titulū prorsus perdidisti, sed an tu Patris? tu tamen Pater es, Aperi igitur piissime Pater, aperi neminem despicientes oculos tuos! vide indignum quidem visu, tamen Filium ad te o Pater recurrentem, audi confitentem: Peccavi coram Coelo, terra

& te Pater, non amplius tamen, malo
millies mori, quam te offendere, hic sit
terminus delictorum meorum, Amen.

A C T U S.

Ex Doctrina Concilij Tridentini

Candissima Trinitas Deus meus, Cre-
do firmissimè, & super omnia, te,
Deum meum & culpis nostris offendis,
& pœnitentiâ placari, credo, & pro-
fiteor remissionem peccatorum, & Sacra-
mentum pœnitentiæ ad eandem remissio-
nem peccatorum nostrorum à Domino
nostro JESU Christo institutum &c. Cre-
do, inquam, propter summam illam ve-
racitatem, qua hæc omnia revelasti, &
per Ecclesiam credenda proposuisti.

Timeo equidem à judiciis tuis, &
demeriti mei conscius, & te revelante,
esse te Iudicem, Vindicemque peccato-
rum nostrorum rigidissimum, Justissimum
non ignorans. Tamen & summa tua,
ac misericordissima in nos bonitas, &
promissa à te pœnitentibus venia spem
mihi facit firmissimam per hoc, quod
cū gratia tua suscipere intendo, pœnitenti-
æ Sacramentum, obtinenda remissionis

delictorum meorum. O Fons omnis boni, amo te, & iustifica me, en enim omnium peccatorum maximus.

Detestor, & execror ex toto corde omnia peccata mea, super omnia detestabilia, doleoque summè, summam illam, ac infinitam Bonitatem, Perfectionem, Excellentiam, Majestatem tuam à me offensam, quam amo nunc, & appetio super omnia, propter illam metipsam peto humillimè veniam, firmissimèque propono. gratia tua adiuvante, non te unquam amplius offendere, qui omni nostro amore, cultu, obsequio dignissimus es, quia DEUS es, quia id es, quod es.

O Clementissima Virgo, JESU Christi Redemptoris mei Mater dilectissima, intercede pro me apud eundem Filium tuum, & impetra mihi gratiam, ut cum anima mea fructu, & vero cordis dolore Confessionem hanc Institutam, impetra mihi plenam remissionem peccatorum, & perfectam vitæ emendationem, ad animæ meæ Salutem ad tuam, tuique Filij gloriam Sempiternam, Amen.

POST CONFESIONEM

Benignissime

Benignissime JESU revertor ad te, cum
leproso mundato. & cadens in faciem
meam ante pedes tuos gratias ago, quia
me à lepra peccatorum Sanguine tuo
mundasti, benedicta sit in æternum Boni-
tas tua, quæ me respexit longè erran-
tem, & non projecit à facie sua me
canem fatidum, sed omnia peccata mea
post tergum suum projecit. Quis sum
ego Domine, quia dignatus es me rebel-
lem, me tui contemptorem, vilissimum-
que terræ vermiculum, me fugitivum tam
benignè trahere ad te, tam misericor-
diter osculò pacis donare; tua hoc Boni-
tas fecit o Pater misericordissime, qui
me prodigum Filium ad te reducem Su-
scepisti, stola gratiæ induisti, Pater am-
plexu dignatus, misericordias tuas igitur
cantabo in æternum, & benedicam te in
omni tempore, qui propitiâs iniquita-
tibus meis, qui redimis de interitu vitam
meam, qui coronas me in misericordia,
& miserationibus tuis. Quis verò jam
amplius me Separabit à te o bone IE-
SU? an tribulatio? an voluptas? an mors?
nihil horum, cum gratia tua statuo fir-
miter custodire judicia Justitiæ tuæ Malo
morì, quàm sedari, quia mihi bonum

est adherere tibi, Confirma Domine hoc
propositum meum, quod in me operatus
es: Adjuva me Domine IESU, o Virtus
mea, firmamentum, & Liberator meus.
Adesto Divina Mater, peccatorum refue-
gium. Adeste Beati Cœlites Patroni mei,
Amen.

PRECATIO

Ante. S. Communionem.

Dignare Suscipere o Beata Trinitas
unus Deus hoc Sacrificium, &
Communionem Corporis & Sangvinis
D. N. I. C. quæ ego indignus peccator
& inutilis Servus tuus, omnium San-
ctorum triumphantium, & militantium,
omnium possibiliū Creaturarum possibili
severentia, gratitudinis, amoris, & de-
votionis affectu offero Divinæ Majestati
tuæ una cum Communionibus Beatissimæ
V. MARIE, & innum Sanctorum,
Secundum tuam Sanctissimam, ac Sanctæ
Mariæ Ecclesiæ intentionem,

Actus Fidei,

Credo

Credo firma Fide Domine JESU Christe propter tuam revelationem, te sub accidentibus Eucharisticis esse verè, & realiter præsentem, unâ cum Divinitate, animâ, & corpore tuo præioso, & quidem per conversionem totius substantiæ vini in Sangvinem, illum inquam Deum te præsentem credo, & confiteor in hoc Sacramento, qui ex Patre genitus es ante omnia sæcula ei consubstantialis, qui pro salute nostra incarnari, nasci, & mori voluisti, qui denique à mortuis, redivivus nunc ad dexteram Dei Patris sedes. Judex vivorum, & mortuorum.

Actus Gaudij.

GAude, & exulta anima mea, ecce Rex tuus venit tibi, en ipse stat post parietem, & velamen istorum accidentium panis. En pulsat ad cor tuum, ut ipsa aperias, o quanta mea felicitas! Regem Cœli, & terræ meo suscipiam hospitio, illum complectar, quem castis suis visceribus, quem in ulnis suis Virgo gestavit, cujus visione omnes Beati in Cœlo sagittantur.

Actus Humilitatis

Sed unde hoc mihi, ut Dominus meus
veniat ad me? quis enim ego sum,
Domine? & & quis tu? tu candor lucis
æternæ, infinita puritas, ego putredo, ego
Summa fœditas. Tu immensa Majestas,
ego vermis, & cinis; ergo nunc parum est
tibi semel in stabulo pro me natum esse,
quia hodie iterum ad sterquilinum
cordis mei intrare desideras? o Domine
exi à me, quia homo peccator sum, non
est bonum hunc panem filiorum mihi
cani putrido dare, non expedit hanc Re-
demptionis nostræ geminam pretiosam
ante porcum projicere.

Actus Spei.

Scio Dominè, quia propter peccata mea
indignus sū aere que respiro indignus
Cœlò, quod aspicio, dignus mille inferis. Et
quomodo præsumā accedere ad te sub his
Eucharisticis speciebus vere præsentè? ibi
enī adest corpus tuū sole splendidius, electū
ex millibus. Ibi est Sanguis pro nostra
salute effusus, ibi denique later Divini-
tas tua. Abyssus tamen malitiæ, nequi-
tiæ, & nihili mei abyssum invocat mi-
sericordiæ, & bonitatis tuæ Domine.
Nam

Nam licet plures sint arenas maris iniquitates meæ. Spero tamen, quia non repelles me à te, Spero in pretio Sanguinis tui, utique Domine, nihil horum odiasti? quæ fecisti. utique & catelli edunt de micis Domini suorum.

Tadium,

Usquequo Domine dulcissime amor mi JESU tenes animam meam? & non venis ad eam ecce jam tædet ipsam vitam suam, Domine descende, festina, veni priusquam moriatur vita mea in me, & antequam extinguatur lucerna Spiritus mei, odiosa est mihi omnis quies sine te, omnis dulcedo amara, omnis consolatio insulsa, longa est mihi omnis mora, aut tolle me, aut veni ad me. Ades Domine, ades, desidero te millicies, moriar sine te. veni, ostende mihi faciem tuam. Adesto JESU, adesto ocyus, & tadium cordis mei præsentia tuâ releva nolo Angelos, nolo quidquam tuum, te volo, tu veni.

Invitatio Christi.

Invito te Christe ad cordis mei domum
G4 muneulam,

munculam, tibi desideratam, apertam,
 & pro paupertate mea paratam; Veni
 igitur mi dulcis JESU, veni fuge dile-
 cte mi formose mi. Veni unice mi, veni
 similis capræ hinnuloque cervorum, Ve-
 ni saliens in montibus, transiliens colles,
 veni Ascensor Cœlorum, Ascensor Che-
 rubinorum qui ambulas super ventorum,
 pennas, veni, ad te desidero, veni, te
 concepisco, veni tui amore languco, veni
 mi JESU, veni, & desiderium meum
 imple. implendo auge ut plus te appetat
 te habeat, te habere in æternū gaudeat.

Jam jam accessurus.

Veni ergo bone JESU veni Sponse
 animæ meæ! veni ad me, & nē Sper-
 nas pauperculam animam meam. Veni
 o unice amor meus! o JESU dono tibi
 cor meum, animam meam, corpus meum,
 paratum cor meum DEUS, paratum
 cor meum.

O Deus! qui pascis me à juventute
 mea, da mihi panem nunc vitæ Super-
 substantialem quotidianum, ut mor-
 tem non gustem in æternum,

A M E N.

POST

POST SACRAM.

Communione.

Salve mendi Salutare, Salve Salve JESU
 chare, Cordi tuo me aptare vellē verē,
 tu scis quare, ore meo te contingo, &
 ardenter ad me stringo, in te meum cor
 intingo, O quam dulcis panis iste, qui
 te gustat JESU Christe; tuo victus à
 dulcore, mori posset pro amore. O mi
 JESU portio tua corpus meum; portio
 mea corpus tuum, o mi JESU portio
 tua voluntas meā, portio mea voluntas
 tua, o si Sangvinem possem fundere pro te.

Actus Adorationis.

Saluto, & adoro te Augustissimum
 Sacramentum, adorationibus omnium
 hominum, & Angelorum usq; ad diem
 Judicii duraturis.

Laudo, & adoro Sanctissimum Sacra-
 mentum. tot laudibus, quot ore pro-
 fessi, quot corde omnium hominum
 Gs unquam

134 *Post Communionem*
nunquam excogitari potuere, vel possunt.

A C T U S.

Gratiarum Actionis.

Quid retribuam tibi Domine JESU?
pro omnibus, quæ tribuisti mihi?
quomodo te non amabo dulcissime ho-
spes? amorque mi JESU, aut potius quo-
modo te amabo?

O Quis etiam mihi det omnium
Sanctorum triumphantium, & militan-
tium corda ad te mi JESU diligendum?
o utinam haberem latitudinem cordis
Sicut arena maris, Sicut totus mundus,
ut amare te possim latissime mi JESU,
utinam cor omnium hominum, cor
omnium Angelorum, atque utinam cor
tuum, & MARIE meum esset, ut ardore
succensus seraphico, & Divino igne in-
extingvibilis charitatis tuæ ardeam, &
totum me consumat, totum rapiat ignita-
vis amotis tui.

A C T U S.

Benedic

Benedic mi JESU, hospes amantissime
toti Corpori animæ, vitæ, membris,
in quibus es receptus, & hodie moraris.
Benedic lingvæ meæ, pectori, palatui
atque illi horæ, momento, quo ad me
venisti. Benedic omnibus Cogitationibus
operibus, sermonibus, officiis moribus
meis.

Credo quia tu es Christus Filius Dei
vivi qui ad me descendisti. Vivo ego,
jam non ego, vivit verò in me Christus.
Cor meum, & caro mea exultaverunt
in DEO meo. Per viscera misericordie
DEI nostri visitavit nos oriens ex alto.
Domine IESU noverim me noverim te,
nec aliud cupiam extra te. Credo, quod
Redemptor meus vivat, vivit in me
Christus.

Exultat Spiritus meus in DEO Salu-
tari meo. Gratias tibi ago, quia tu venisti
ad me, Dominus meus, & DEUS meus.
Osculor Domine Sacrosancta vulnera tua.

Vivat in me IESUS, regnet, trium-
phet IESUS, Dei vivi, & MARIE Fi-
lius, qui ex Patre genitus, ante omnia
Sæcula ei consubstantialis pro me nasci,
& mori voluit, qui denique à mortuis
victor exiit,

Amate, & recreate Dominum in me
consensum omnes Sancti Angeli, Cantate
illi Sanctus vestrum. Saluto te hospes
amantissime cum tua Sanctissima Geni-
trice, Matreque, omnium nostrum MA-
RIA, quæ te vivum, & triumphantem
de morte recepit Salutavis, amplexa est.

AD B. VIRGINEM.

Respice in me Virgo Gloriosissima MA-
RIA, quia nunc habeo in corde meo
amantissimum Filium tuum IESUM, illū
ipsum hodie mihi donō datum tibi re-
presento, & offero tuis brachiis constrin-
gendum, tuo ore exosculandum, & unā
mecum adorandum.

Sancti Angeli, Sancti Archangeli Cheru-
bin, & Seraphin, aspiciate primogeni-
tum Patris æterni, quem introeuntem
Orbā terrarū iussu patris adoratis adora-
te nunc eum in Corde meo, cantate
Illi pro me Sanctus, &c.

Omnes Sancti, & Sanctæ DEI, vos
praefectim PATRONI mei, NN. amate
in Corde meo, laudate, & magnificate
mecum hunc Dominum meum, quia
esuriens implevit hons, respexit super
pauperem: mortuū similem mei, A. Oculi.

HORA SACRI

*Quā Sodalis Marianus assistit
tremendis Sacrificij Mysteriis
vel illa audit.*

Oratio Præparatoria

O Dulcissime Domine Iesu Christe, ap-
ri os meum ac labia mea ad bene-
dicendum & glorificandum nomen tuum
quod est super omne nomen benedictum,
mundaque cor meum ab universis malis,
& perversis cogitationibus, ut te jugiter
labia mea collaudent, mens meditetur,
Vita glorificet, anima benedicat. Omni-
potens æterne Deus qui non semel tan-
tum Filium tuum unigenitum in cruce
nostræ reparationi impendisti, sed ejus
oblationem tibi acceptissimam in Ecclesia
tua quotidie renovari, ad ejus fructum
in nobis renovandam voluisti, tribue
nobis quesumus, tam admirando huius
& tam salutari tue pietatis mysterio,
tam

ram attente, reverenter, & amanter
interesse, ut ejus participationem, quam
efficacissimè consequi valeamus Per Chris-
tum Dominum nostrum. Amen.

Ad Introitum

Te Patrem ingenitum, te Filium uni-
genitum, te Spiritum sanctum Paracle-
tum, sanctam & individuam Trinitatem
toto corde, & ore confitemur, lauda-
mus atque benedicimus.

Gloria Patri qui creavis nos;

Gloria Filio qui redemit nos

Gloria Spiritui sancto, qui sanctifica-
vit nos,

Gloria lumen & individue Trinitati
Deo nostro in secula seculorum Amen.

Ad Kyrie eleison.

O dulcis Iesu, doleo ex toto corde, quod
te Deum meum, summum bonum,
tories, & tam graviter maxime his pec-
catis N. N. offendi, ô quam doleo ex
amore tu, exaudime clementissime Iesu,
tuam nunc implo ro misericordiam, igno-
sce precor, cupio per tuam gratiam
emendare, & tuis legibus obtemperare.
O Iesu miserere mei & salva me pro-
pter nomen sanctum tuum.

Dic postea cum Sacerdote.

Gloria

Gloria in excelsis Deo, Et in terra
 pax hominibus bonae voluntatis.
 Laudamus te. Benedicimus te, Glorifica-
 mus te. Gratias agimus tibi propter
 magnam gloriam tuam. Domine Deus
 Rex caelestis. Deus Pater omnipotens.
 Domine Fili unigenite Iesu Christe.
 Domine Deus Agnus Dei. Filius Patris.
 Qui tollis peccata mundi, suscipe de-
 precationem nostram. Qui sedes ad dex-
 teram Patris. miserere nobis. Quoniam
 tu solus Sanctus, tu solus Dominus, tu
 solus altissimus Iesu Christe cum Sancto
 Spiritu in gloria Dei Patris Amen.

Ad Collectam.

Exaudi Pater quicquid Ecclesia catholica
 in Filii tui nomine pro nostra neces-
 sitate petit, Et concede ne quid contra
 voluntatem vel honorem tuum unquam
 petamus.

At Epistolam.

O sempiterna Patris sapientia jube, &
 da, ut per gradus humilitatis de virtute
 in virtutem ascendamus. Concede nobis,
 ut de tribulationibus ad aeterna gaudia
 Christum Iesum imitantes perveniamus.
 Amen.

Ad Evangelium.

Domine Iesu Christe qui Evangelium
 vivo ore predicasti mortalibus, aperi,
 quaso

quæso mentes nostras, ut huius verbo tuo
salvifico, sincera charitate ad finem usque
constanter adhareamus. Amen.

Ad Credo.

Credo in unum Deum, Patrem omni-
potentem, factorem cœli, & terræ,
visibilem omnium, & invisibilem. Es
in unum Dominum Iesum Christum Fi-
lium Dei unigenitum, & ex Patre natum
ante omnia sæcula, Deum de Deo, lumen
de lumine, Deum verum de Deo vero,
genitum non factum, consubstantialem
Patri, per quem omnia facta sunt. Qui
propter nos homines, & propter nostram
salutem descendit de cœlis. Et incarna-
tus est de Spiritu sancto, ex Maria Vir-
gine, & Homo factus est. crucifixus etiam
pro nobis sub Pontio Pilato passus &
sepultus est: Et resurrexit tertia die secun-
dum scripturas. Et ascendit in cœlum,
sedet ad dexteram Patris. Et iterum
venturus est cum gloria iudicare vivos
& mortuos. Cujus Regni non erit finis.
Et in Spiritum sanctum Dominum, &
vivificantem: qui ex Patre, Filioque pro-
cedit. Qui cum Patre & Filio simul
adoratur, & conglorificatur. Qui loquutus
est per Prophetas, Et unam sanctam
Catholicam

Catholicam, & Apostolicam Ecclesiam.
Confiteor unum baptisma in remissionem
peccatorum. Et expecto resurrectionem
mortuorum, & vitam venturi sæculi.
Amen.

Ad Offertorum.

Clementissime Pater, fac me dignum,
ut offeram tibi merita vitæ, & mortis
dilectissimi Filii tui. Et nunc ego in
unionem meritorum Domini nostri Iesu
Christi offero tibi intellectum, voluntatem,
& memoriam meam, cogitationes
verba, opera, labores, gaudia, bona omnia;
vitam denique, & quicquid possideo, aus
possidere possum per omnem eternitatem;
idque per manus Beatissimæ Virginis
Mariæ & sanctorum Angelorum, qui huic
Sacrificio assistunt, ut Deo orationes &
oblationes fidelium presentent.

Ad orate Fratres.

Suscipiat Dominus sacrificium de mani-
bus tuis, ad laudem & gloriam nominis
sui. ad utilitatem quoque nostram, totius-
que Ecclesiæ suæ sanctæ.

Ad Prefationem.

Omnipotens æterne Deus, quem unum-
in-Trinitate, & Trinum in unitate con-
fitemur. Te laudo, te adoro, te glorifico
O beate

O beata Trinitas. Tu es summum bonum, de quo manant omnia bona: tu abyssus totius felicitatis. tu solus altissimus, Tibi ego cum universa Curia caelesti concino, Sanctus Sanctus Sanctus, Dominus Deus Sabaoth, pleni sunt caeli, & terra, gloria tua.

Ad sacrum Canonem.

Domine Iesu Christe Redemptor meus, vita, & salus mea, te laudo, tibi gratias ago. Accede ad me Domine, appare mihi, & consolatus ero, ostende mihi faciem tuam, & salvus ero: exhibe mihi praesentiam, tuam, & implebitur omne desiderium meum, Amen.

Praxis facienti memento ante Elevationem pro vobis.

Memento clementissime Pater per passionem & mortem dilectissimi Filii tui, Ecclesiae Sanctae tuae, illamque ceu sponsam Filii tui, protege, sanctifica, & exalta, ejusque praesides, defensores, & ministros N. N. Spiritu sancto reple, ut te tota virtute, sicut scis, & vis, per te, suosque subditos perfecte glorificent.

Memento etiam Domine, parentum, fratrum, consanguineorum, benefactorum, & amicorum meorum N. N. omniumque

pro

pro quibus me vis orare, & eos pecu-
liari gratia tua dirige, prorege, & in
via salutis promove.

In Elevatione.

Ave verum corpus natum de Maria
Virgine,

Vere passum, immolatum in Cruce
pro homine,

Cujus latus perforatum, fluxit unda,
& sanguine.

Eto nobis prægustatum, in mortis exa-
mine,

Odulcis, ô pie, ô Iesu Fili Maria mi-
serere mei, Amen.

Post Elevationem.

Anima Christi sanctifica me, ut supra.

*Praxis faciendi memento Post eleva-
tionem pro defunctis.*

Memento Clemensissime Pater omnium
fidelium defunctorum maxime N.N. Et
pro quibus singulariter orare teneor æter-
nam eis requiem indulgendo, per meri-
ta Christi, B. V. & omnium Sancto-
rum. Amen.

Deinde prepara te ad communionem
spiritualem. Et dum Sacerdos se ipsa, &
sacramentaliter, tu spiritualiter Christum
in sacra Hostia in cor tuum admitte.

Invisio Christi Iesu. O Iesu

O Iesu veni, veni dilectē mi, veni Deus meus, Dominus, spes mea, amor meus, & omnia, posside sedem cordis mei, conforma illud cordi tuo, ut idem velit idem nolit tecum, nunc, semper, æternum, & ultra.

Tum imaginare tibi quasi vere, & sacramentaliter cum Sacerdote communicare & Christum velut præsentem, animo comprehendere.

Post Communionem hanc spiritualem.
Inveni quem diligit anima mea, tenui eum, nec demittam. O Iesu, quam bonus es, & fuisti hucusque erga me! agnosco, omnique possibili affectu gratias ago! quam ingratus ego erga te! doleo pure propter te, ignosce, supple propter te, & quidquid amas, amo ego quoque propter te, da gratiam emendandi omnia etiam minima peccata, maxime hoc N. Et in amore & gratia tua perseverandi in æternum. O Iesu, O Iesu fiat, fiat.

Ad beatam Virginem, Angelum custodam & Sanctos.

O Regina sanctorum omnium, Filia æterni Patris, Mater Filie sponsa Spiritus sancti Templum sanctissimæ Trinitatis, O Angele Custos, O vos Patroni mei

mei N, W. omnesque electi Dei benedicite. laudate, & superexaltate Dominum mecum. ex hoc, nunc & usque in saculum, una voce illi acclamantes Sanctus, Sanctus Dominus Deus Sabaoth: Benedictio, & claritas, & sapientia, & gratiarum actio, honor, & virtus, & fortitudo Deo nostro in sacula saculorum Amen.

Ad Benedictionem Sacerdotis.

Benedicat nos omnipotens Deus, Pater & Filius, & Spiritus Sanctus Amen.

Initium sancti Evangelii secundum Ioannem.

Gloria tibi Domine.

IN principio erat Verbum, & Verbum erat apud Deum: & Deus erat Verbum. Hoc erat in principio, apud Deum. Omnia per ipsum facta sunt: & sine ipso factum est nihil. Quod factum est, in ipso vita erat: & vita erat lux hominum; & lux in tenebris lucet, & tenebrae eam non comprehenderunt. Fuit homo missus a Deo, cui nomen erat Ioannes. Hic venit in testimonium, ut testimonium perhiberet de lumine, ut omnes crederent per illum. Non erat ille lux sed ut testimonium perhiberet de lumine.

de lumine. Erat lux vera, quæ illuminat omnem hominem venientem in hunc mundum. In mundo erat, & mundus per ipsum factus est: & mundus eum non cognovit. In propria venit, & sui eum non receperunt. Quotquot autem receperunt eum, dedit eis potestatem Filios Dei fieri his qui credunt in nomine eius. Qui non ex sanguinibus, neque ex voluntate carnis, neque ex voluntate viri: sed ex Deo nati sunt. Et Verbum caro factum est: & habitavit in nobis(& vidimus gloriam eius, gloriam quasi unigeniti à Patre) plenum gratiæ & veritatis. Deo gratias.

Ad finem Sacri.

OMnipotens æterne Deus, qui ex amore divino unigenitum Filium tuum mediatorem inter te; & peccatorem, constituisti. Te oro, ut hoc Sacrificium, hanc victimam, à me peccatore misero suscipias, quod male, & negligenter actum est, ignoscas. O Domine ne me unquam à te divelli patiaris. Benedic animæ meæ, & præsta, ut hic tibi ad finem usque fideliter serviā in omnibus: & post hanc vitā tuo aspectu frui, teque æternū cū beatis omnibus laudare, & glorificare merear, Amen.

HORA

HORA VESPERTINA

*Qua Sodalis Marianus antequam eat cubi-
tum Conscientiam examinet per hac quinque
puncta & pie obdormiat.*

Solve Deo grates. 2. Lumen pete. 3.
Discute te met. 4. Delicti Veniam posce
5. Recide malum.

O Infinita bonitas, te laudo, glorifico,
& gratias ago pro omnibus beneficiis
tuis, quæ hodie mihi, & tota vita contulisti
*ORA DEUM gratiam, quâ cognoscas
peccata & digne de iis doleas, sic:*

O Immenſa Maieſtas, Lux vera & in-
deficiens, illumina oculos meos,
ut cognoscam peccata mea inflammâ af-
fectum. ut digne ea deteſter, quo puri-
ficatus mente, tibi Deo meo digne merear,
ſamulari, *MEMORA, Exige a conſcientiâ
rationẽ de admiſſis præſenti, die peccatis.
LUGE, Dole de commiſſis peccatis & ve-
niam pete, & g. ſit*

Inime doleo Domine JESU DEus meus
de peccatis meis quibus ego indigniſ-
ſimus tuam maieſtatem quam ex toto
corde amo impudentiſſime offendi, jam
deteſtor, fugereq; per tuam gratiam, &
pro his ſatisfacere, quantum exigis, volo,
emenda

emendationem & satisfactionem, quantum possum, promitto.

Propono Seriam emendationem in his, quae in te apprehendisti, sic, &c.

O Aeterna Sapientia Christe, JESU, propono cum tua gratia majori diligentia, & aequae emendatione, commissae neglectae compensare: atque oro, si hac nocte hinc me discedere velis, pro tua misericordia mecum agas: si vero cogites vitam meam diutius prorogare, gratiam largiaris, sobrie, iuste, & pie vivendi in hoc saeculo. Amen.

Post, haec Dicas Deprofundis. &c. pro Animabus Detunctis. Commendes te Beatissimae V. M. & S. Angelo Custodi ac, SS. Patronis suis: Antequam Obdormiveris. Amen.



Biblioteka Jagiellońska



stdr0026409

